Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सए सए उवट्ठाणे,
सिद्धिमेव ण अन्नहा।

अपने मत की प्रशंसा करने वाले कहते हैं–अपने-अपने सांप्रदायिक अनुष्ठान में ही सिद्धि होती है, दूसरे प्रकार से नहीं होती।

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 52 • 4 - 10 अक्टूबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 02-10-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

जजेज एवं एडवोकेट्स कॉन्फ्रेंस का आयोजन

न्याय निष्पक्ष एवं विवेकपूर्ण होना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

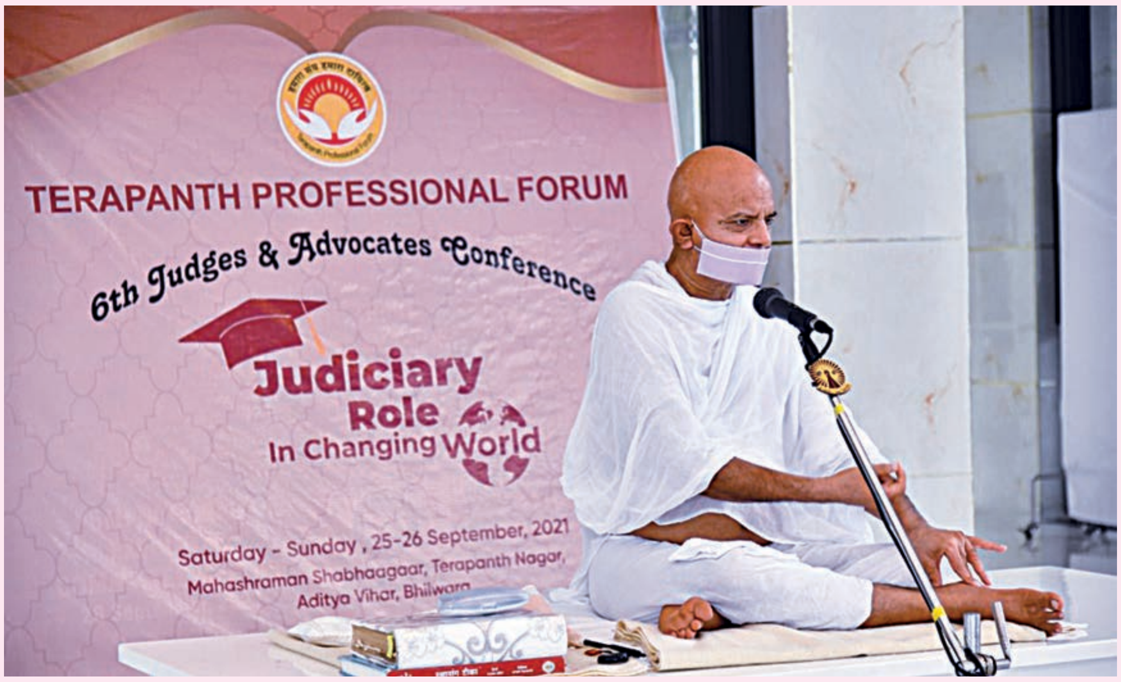

भीलवाड़ा, २५ सितंबर, २०२१

संयमदान प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में शास्त्रकार ने दान के दस प्रकार बताए हैं। भारतीय संस्कृति में दान की परंपरा बहुत प्राचीन है। दान का अर्थ है, देना। इस देने की पृष्ठभूमि में अनेक प्रेरणा काम करती रही है। वे प्रेरणाएँ एक जैसी नहीं हैं।

कुछ व्यक्ति दीन-दया में देख द्रवित होकर, कुछ लोग राष्ट्र की सुरक्षा के लिए, महामारी-आपदा जैसी स्थिति आ जाए, कोई आदमी भय या मजबूरी में, कोई आदमी नाम-ख्याति कमाने के लिए दान दे सकता है। ठाणं के इस सूत्र-श्लोक में जो दान के दस प्रकार बताए हैं।

दस दानों में पहला है–अनुकंपा दान। कोई कृपण, अनाथ, दरिद्र, रोगी व्यक्ति पर करुणा आने से दान देना। दूसरा–संग्रह दान। सहायता करना, दान देना। तीसरा दान है–भय दान। किसी के भय से दान दे देना। चौथा है–कारुण्यक दान। कारुण्य यानी शोका प्रियजन की मृत्यु के निमित्त उसके कपड़े आदि का देना। एक लौकिक मान्यता यह रही है कि जो मृत आदमी के उपकरण होते हैं, वो अगर दान में दे दिए जाएँ तो मृत आत्मा आगे सुखी रहती है।

पाँचवाँ–लज्जा दान। लज्जावश दान देना। लोक-लज्जा के कारण दान देना। छठा है–गौरव दान। कोई नट मंडली या खेल तमाशे वाले को दान देना या शिलालेख पर नाम आएगा वो भावना से यश के लिए दान देना। सातवाँ है–अधर्म दान। हिंसा-चोरी आदि गलत कामों के लिए दान देना। अधर्म करने वाले लोगों को दान देना। आठवाँ है–धर्म दान। जो साधु है, तृण मणि-मुक्ता में सम रहने वाले हैं, ऐसे सुपात्र साधुओं को जो दान दिया जाता है, वह धर्म दान है।

नौवाँ दान है–कृतमिती दान यानी उसने मेरा उपकार किया था, मेरा काम किया था। आज उसको जरूरत है, मैं उसका प्रत्युपकार करूँ। यह किए हुए को याद रखते हुए देना कृतमिती दान देता है। दसवाँ दान है–करिष्यति दान। ये आदमी मेरे आगे काम आएगा, मैं पहले से कुछ उसकी सहायता करूँ।

यह शास्त्र में दान के बारे में चर्चा आई है। ठाणं के अलावा परमपूज्य भिक्षु स्वामी का गीत–दस दान की ढाल में दस दान की व्याख्या की गई है। वाचक प्रमुख उमास्वाति ने भी दान पर चर्चा की है। दान एक ऐसा विषय है, जो प्रसिद्ध भी है, बहुत प्रचलित भी है और विभिन्न संदर्भों-भावनाओं से दान दिया जा सकता है।

सूक्ति मुक्तावली में कहा गया है कि वितरण-दान कोई न कोई किसी रूप में फल देने वाला हो सकता है। व्यावहारिक रूप में, तात्कालिक रूप में या एक उपादान रूप में वह फल देने वाला हो सकता है। दान प्रीति को बढ़ाने वाला बन जाता है। शुद्ध साधु को दान देने से आध्यात्मिक दृष्टि से कल्याणकारी दान हो जाता है।

दान संबंधों को एक मधुरता प्रदान कराने वाला, मजबूत बनाने वाला और सम्मान को बढ़ाने वाला भी बन सकता है। वितरण-दान कहीं भी निष्फल नहीं होता। दान एक व्यापक तत्त्व है। दान का विश्लेषण भी किया जा सकता है। लौकिक दान-लोकोत्तर दान रूप में व्याख्या की जा सकती है।

दान केवल पैसे या भौतिक वस्तु का ही नहीं होता और भी दान हो सकता है। किसी को ज्ञान दे देना, सूत्र, अर्थ, ग्रंथ धर्म बोध तत्त्व की बातें, तात्त्विक बातें आदि का ज्ञान देना भी दान है। यह बड़ा महत्त्वपूर्ण है–ज्ञान देना। पूज्य जयाचार्य के कितने-कितने ग्रंथ हैं, उनको पढ़ने से कितना ज्ञान प्राप्त हो सकता। ज्ञान भी लेने वाला चाहिए तो ज्ञान दिया जा सकता है।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने भी कितनों को ज्ञान देने का, पढ़ाने का प्रयास किया था। इन दस प्रकारों से ज्ञान की विस्तृत विवेचना प्राप्त हो सकती है।

पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित मुनि मोक्षकुमार जी को अट्ठाई की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर ने श्रावकों को भी तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंचालक पूज्यप्रवर की सन्निधि में

व्यक्ति महात्मा नहीं बन सके तो सदात्मा बनने का प्रयास करे : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २० सितंबर, २०२१

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी की सन्निधि में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंचालक डॉ० मोहन भागवत दर्शनार्थ पधारे। पूज्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि ज्ञानी आदमी के ज्ञान का सार है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता। अहिंसा ज्ञान का सार है।

हमारे जीवन में तीन तत्त्वों का महत्त्व है–विचार, संस्कार और आचार। विचार और आचार नदी के दो तट हैं। दोनों तटों के मिलने का सेतू है–संस्कार। विचार संस्कार के माध्यम से आचार में परिणीत हो सकता है। आदमी का कभी-कभी विचार बढ़िया होने पर भी आचार बढ़िया नहीं होता है। तो दोनों में दूरी रह जाती है।

आदमी को अच्छा बनाने के लिए अच्छे विचार उसको दे, अच्छी जानकारी उसे दें और उसमें आस्था वैसी पनप सके, पुष्ट हो सके, वो रुचि-आकर्षण जाग सके तो वो अच्छे विचार आचार में परिणत हो सकते हैं। राग और द्वेष हैं, ये कर्म के बीज हैं, मूल कारण है। राग-द्वेष है, तो आदमी अपराध में चला जाता है। बाहरी युद्ध बाद में शुरू होता है, पहले आदमी के दिमाग में युद्ध शुरू होता है। फिर उसकी परिणति बाहर के युद्ध में होती है।

भगवत् गीता में अर्जुन श्रीकृष्ण से प्रश्न करता है कि पुरुष किसके द्वारा प्रेरित होकर पाप का आचरण करता है? कृष्ण कहते हैं कि काम और क्रोध ये दो तत्त्व हैं, जो रजोगुण से उत्पन्न होने वाले हैं, ये महापापी हैं। आदमी के वैरी काम और क्रोध हैं। आलस्य मनुष्यों का महान शत्रु है और वो उनके शरीर में रहने वाला है। काम-क्रोध तो भावों में रहने वाले, और भीतर में रहने वाले हैं।

आदमी लोभ या गुस्से से हिंसा कर सकता है। जैन आगम में वीतराग शब्द आता है और गीता में स्थितप्रज्ञ शब्द आता है। जैन आगम में कहा गया कि समता रखो और श्रीमद्भगवद् गीता में भी कहा गया योग यानी समता में रहो। सभी धर्मों के ग्रंथों में यही बात कही गई है कि समता में रहो, समता रखो।

राग-द्वेष या काम-क्रोध ये जितने आदमी के कंट्रोल में रहते हैं, तो आत्मा भी निर्मल रहती है। आदमी का आचार भी अच्छा बन सकता है। भारत में कहते हैं कि सत्संगति करो। संतों या सज्जनों की संगति करो। मैं कहूँगा अच्छे ग्रंथों की भी संगति करो। हम पंचेन्द्रिय प्राणी है, पाँच इंद्रियों में दो इंद्रियाँ आँख और कान ज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ज्यादा हैं। कान से बहुत सुनते हैं और आँख से बहुत देखते हैं। पढ़ते हैं तो ग्रहण होता है। अच्छा प्रवचन सुनेंगे तो हमारे भीतर अच्छी सामग्री जा सकेगी। आँखों से अच्छे संत पुरुष के दर्शन होंगे या अच्छे ग्रंथ पढ़ेंगे तो हमारे भीतर अच्छी चीजें जाएँगी। हमारे संस्कार अच्छे होंगे। मजबूत बन सकेंगे।

ध्यान, स्वाध्याय कह दें, यम-नियम कह दें, अणुव्रत कह दें, इनको ज्यों-ज्यों आदमी ग्रहण करता है तो हमारे संस्कार भी फिर मजबूत बन सकते हैं और आचार भी अच्छा बन सकता है। संकल्प है, जो किसी की प्रेरणा से, भावों की शुद्धि से अच्छा जाग जाए। हमारा मन शिव संकल्प, कल्याणकारी, अच्छे संकल्पों से मजबूत बने। आचार अच्छा हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

शस्त्र का नहीं शास्त्रों का अनुगमन करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २४ सितंबर, २०२१

महातपस्वी, महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि दो शब्द हैं—शास्त्र और शस्त्र। आ और अ का अंतर है, बाकी दोनों समान शब्द हैं। परंतु दोनों में अर्थ का बड़ा अंतर है।

शास्त्र वह होता है, जिससे शासन, शिक्षा और अनुशासन मिलता है और इसमें त्राण देने की शक्ति होती है। हमारे शास्त्रों में शासन और संयम की बात है। इन शिक्षाओं को कोई अंगीकार कर ले, तो आत्मा को त्राण भी मिल सकता है। जिसके द्वारा शासित-अनुशासित किया जाए, निर्देश दिया जाए वो शास्त्र मान लिया जाए।

दूसरा शब्द है—शस्त्र। जिससे हिंसा की जाए वो शस्त्र होता है। शस्त्र हिंसा का साधन होता है। यहाँ शास्त्रकार ने शस्त्र के दस प्रकार बताए हैं। अहिंसा के पालन के लिए हिंसा को भी समझना अपेक्षित होता है। पाप को समझने के लिए पाप को जान लेना भी अपेक्षित हो सकता है।

नव तत्त्वों में पाप, आश्रव, बंध सब आ गए हैं। हेय और उपादेय दोनों को जान लो, क्योंकि हेय भी ज्ञेय है, उपादेय भी ज्ञेय है। हेय को जानकर छोड़ने का प्रयास करें। उपादेय को जानकर ग्रहण करने का प्रयास करें। यहाँ शस्त्र के दस प्रकार बताए हैं। ये शस्त्र भी ऐसे हैं, जो हमारी धार्मिक चर्या में जानने लायक हैं। ये शस्त्र है—अग्नि, विष, लवण, स्नेह (चिकनाई), क्षार, अम्ल, दुष्प्रयुक्त मन, दुष्प्रयुक्त वचन, दुष्प्रयुक्त काया और अविरति।

अग्नि स्थावर या त्रस जीवों की हिंसा हो सकती है। विष से भी किसी को मारा जा सकता है। लवण व स्नेह (चिकनाई) भी हिंसा का कारण बन जाए। क्षार व अम्ल से भी पानी के जीवों की हिंसा हो सकती है। ये छः बाह्य शस्त्र बताए गए हैं। चार शस्त्र आंतरिक बताए हैं, जिससे अपनी आत्मा का नुकसान हो जाए। मन, वचन, काय की दुष्प्रवृत्ति आत्मा के लिए शस्त्र है। दसवाँ बहुत बड़ा शस्त्र है—अविरति। अप्रत्याख्यान-त्याग नहीं करना। असंयम-अप्रत्याख्यान है, वो कितना बड़ा शस्त्र है, पापों का बंधन हो जाता है।

इन दस शस्त्रों में प्रथम छः द्रव्य शस्त्र हैं, शेष चार भाव शस्त्र हैं। आत्मा के लिए हानिकारक है। इन शस्त्रों का जानने का यह उद्देश्य हो सकता है कि शस्त्रों के उपयोग से बचें। मेरे द्वारा जीव हिंसा न हो जाए। मनोयोग, वचन योग, काय योग कर्म निर्जरा के साधन बनते हैं, तो ये कर्म बंधन के भी साधन बन सकते हैं। अशुभ योग से आश्रव होता है और शुभ योग से निर्जरा होती है।

जो मन बंध का कारण है, वो मन निर्जरा का कारण भी बन सकता है। मन को भाव के संदर्भ में ले लें तो ये भाव बंध और मुक्ति दोनों का कारण बन सकता है। मन ही मन चिंतन के द्वारा भारी कर्मों का बंध हो सकता है, जैसे तंदुल मत्स्य चिंतन के द्वारा सातवें नरक के आयुष्य का बंध कर लेता है। यह निष्कर्ष निकलता है कि मन वाला प्राणी ज्यादा पाप कर सकता है। बिना मन वाला प्राणी ज्यादा पाप नहीं कर सकता।

असंज्ञी है, वो पहली नरक से आगे नहीं जा सकते। संज्ञी है, वो सातवीं नरक तक जा सकते हैं। मन कितना बड़ा एक पाप का साधन बनता है। इसके विपरीत में देखें तो बारहवें गुणस्थान में मन वाला प्राणी ही जा सकता है। असंज्ञी तो बहुलांश पहले गुणस्थान में ही रहता है। बिना मन वाला प्राणी धर्म के क्षेत्र में भी आगे नहीं बढ़ सकता। धर्म में आगे बढ़ने के लिए समनस्क होना जरूरी है।

दुर्मन है, तो पाप का साधन, सुमन है, तो धर्म का साधन। प्रयास करें हम दुर्मना न बनें। सुमना बनने का प्रयास करें। पवित्र संकल्पों वाला हमारा मन रहे। वह हमें बहुत ऊँचा उठा देता है। शिखर पर जाना है तो मन से भी मुक्त होना होगा। मन को पाकर मन से साधना कर पापों से मुक्त होना होगा।

तेरहवें गुणस्थान वाले मनुष्य नो-संज्ञी, नो-असंज्ञी होते हैं। चौदहवें गुणस्थान में तो मनोयोग है ही नहीं, अयोगी अवस्था है। असंज्ञी यानी ज्ञानावरणीय कर्म का उदय और संज्ञी यानी ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षयोपशम। केवलज्ञानी क्षयोपशम से भी ऊपर क्षय अवस्था वाले हैं। अयोगी है, उनके न तो पुण्य का और न ही पाप का बंध होता है। वे तो अबंध अवस्था में रहते हैं।

मन, वचन और काया दुष्प्रवृत्त है, तो वह भी शस्त्र है। शास्त्रकार ने इनको अंतरंग शस्त्र बताया है जो आत्मा का नुकसान करने वाले शस्त्र बन सकते हैं। बन जाते हैं। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने अवधिज्ञान के प्रकार वर्धमान, हियमान, प्रतिपाती और अप्रतिपाती अवधिज्ञान को विस्तार से समझाया। मनः पर्यव ज्ञान के दो प्रकार ऋजुमति और विपुलमति का विस्तार करते हुए फरमाया कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए पात्रता की आवश्यकता होती है। यह ज्ञान सिर्फ ऋद्धि प्राप्त, अप्रमत्त, संयम सम्यक् दृष्टि प्राप्त, पर्याप्तक, संख्यात वर्ष की आयु वाले कर्मभूमि वाले गर्भज मनुष्यों को ही होता है।

साध्वी वर्याजी ने आश्रव-परिश्रम को समझाते हुए कहा कि जिस क्रिया से कर्म का बंधन होता है, उसी क्रिया से कर्म का निर्जन भी हो सकता है। भाव शुद्धि रहने से मन प्रसन्न रहता है।

साध्वी अखिलयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। भीलवाड़ा निवासी दार्शनिक, संवैधानिक और वैश्विक चिंतन करने वाले डॉ० डी०सी० जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

झूठ का त्याग कर सच्चाई की साधना करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २३ सितंबर, २०२१

अमृत देषणा प्राप्त कराने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में सच्चाई भी जीवत है, तो झूठ भी चलता है। शास्त्रकार ने झूठ बोलने के दस प्रकार बताए हैं।

एक आदमी गुस्से के कारण झूठ बोल जाता है। गुस्से के वशीभूत हो गया और मित्र को भी शत्रु कह देता है। गुस्से के कारण आदमी अपने आप पर कंट्रोल नहीं रख पाता। न करने का काम कर लेता है, न बोलने की बात बोल देता है। दूसरा झूठ है—मान निश्रित-अहंकार में बोल देना। घमंड में आकर आदमी है तो निर्धन पर स्वयं को धनवान बता देता है।

झूठ बोलने का तीसरा प्रकार है—माया निश्रित। माया के वशीभूत होकर आदमी झूठ बोल देता है। कपट कर लेता है। जैसे नकटा आदमी बोलता है कि नाक कटा लो, भगवान के दर्शन हो जाएँगे। यह एक दृष्टांत से समझाया। आदमी माया रचकर कितनों की नाक कटवा देता है। चौथा प्रकार है—लोभ निश्चित झूठ। अल्प मूल्य की चीज को बहुमूल्य की बता देना।

पाँचवाँ प्रकार है—प्रेयस निश्रित। प्रेम या राग के वशीभूत हो झूठ बोल देना। छठा प्रकार है—द्वेष निश्रित। द्वेष के कारण से भी आदमी झूठ बोल देता है। मन में द्वेष का भाव है, तो गुणवान को भी निर्गुण बताने का प्रयास किया जाता है। सातवाँ कारण है—हास्य-निश्रित। हास्य-हास्य में आदमी झूठ बोल देता है। मजाक में किसी की चीज उठा ली और पूछे तो नकार जाता है, कारण मन बहलाने के लिए ऐसा कह देते हैं।

आठवाँ प्रकार है—भय निश्रित। डर के कारण आदमी झूठ बोल देता है। नौवाँ प्रकार है—आख्यायिका। कोई कहानी को झूठे तरीके से गूंफित कर देते हैं। क्योंकि उसमें सरसता आ जाएगी। लोग अच्छा समझेंगे। अतथ्यात्मक कहानी गढ़ लेते हैं। सिद्धांत के विरुद्ध ऐसी-वैसी कहानियाँ मनगढ़ंत कर देते हैं। दसवाँ प्रकार है—उपघात निश्रित। किसी को पीड़ा पहुँचाने के लिए। चोर नहीं है, फिर भी उसे चोर बता देते हैं ऐसे भले आदमी को बुरा बता देना।

ये झूठ बोलने के दस प्रकार हैं। यहाँ धातव्य बात यह है कि झूठ बोलने से जितना बचा जा सके, उतना तो मैं टालूँ। गृहस्थों को भी झूठ तो बोलना ही नहीं चाहिए। अपने बचाव के लिए दूसरे पर आरोप लगा देता है। स्वयं द्वारा की गई गलती को अस्वीकार कर लेता है। यों आदमी न्यायालय या पुलिस में झूठ बोलता है। पवित्र पुस्तक की शपथ लेकर झूठ बोल देता है।

झूठ बोलना अविश्वास का कारण बन सकता है। झूठे आरोप लगाने से आदमी का सम्मान नहीं रहता है। कई बार आदमी मनो-विनोद के कारण झूठ का सहारा ले लेता है। हास्य रूप में या लोगों को इकट्ठा करने के लिए झूठ बोल देता है। यह एक कथानक से समझाया।

आत्मा की दृष्टि से तो मृषावाद पाप है। झूठ और चोरी दोनों से बचना चाहिए। साथ में सामायिक-स्वाध्याय, जप आदि की साधना करें। झूठ को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। गीत में सुंदर कहा गया है–'सत्यवादिता सधे न थांस्यूं तो रहणो चुपचाप है। कपटाई कर झूठ बोलणो, जग में मोटो पाप है।'

गृहस्थों को यह प्रयास करना चाहिए कि मेरी वाणी से झूठ बात न निकले। झूठ बोलने से बचें। झूठ का रास्ता तात्कालिक तो लाभ पहुँचा सकता है, पर व्यवहार में लंबे काल में आदमी का विश्वास चला जाता है। हमें झूठ बोलने से बचने का प्रयास करना चाहिए। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। ऊषा बांठिया ने २७ की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

मुख्य नियोजिका जी ने श्रवण के शेष प्रकारों के बारे में समझाया। मिमांशा करने से हमारे ज्ञान की श्रीवृद्धि करने में सफलता मिलती है। जब ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम होता है, तब आदमी को अवधिज्ञान प्राप्त होता है। देवों एवं नारकीय जीवों में तो अवधिज्ञान होता ही है। मनुष्य तथा तिर्यंच में भी अवधि ज्ञान हो सकता है। अवधि ज्ञान के प्रकार–अनुगामी, अनानुगामी, वर्धमान और चारित्र की विशुद्धि को विस्तार से समझाया।

साध्वी शरदयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि जीव-जीव का उपकारी होता है। कोई जीव अनुपयोगी नहीं है।

सत्य में शब्द से ज्यादा महत्त्व भावना का होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २२ सितंबर, २०२१

संयम रत्न प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में सत्य शब्द चलता है। असत्य भी चलता है। सत्य शब्द में एक अर्थ–महात्म्य निहित है। जो जैसा है, उसी रूप में जानना, उसी रूप में प्रकट करना, उसी रूप में श्रद्धा रखना। यह एक सत्य से संदर्भित आराधन प्रतीत होता है।

हम सत्य की आराधना, मन, वाणी और काय से भी कर सकते हैं। भाषा के संदर्भ में शास्त्रकार ने सत्य के दस प्रकार बताए हैं। सत्य में शब्द का महत्त्व तो थोड़ा है, भावात्मकता का महत्त्व ज्यादा है। सत्य में लाभ या झूठ बोलने से जो पाप की बात है, वह शब्द में तो गौण लग रहा है, मूल आत्मा की भावना कैसी है, आशय-लक्ष्य क्या है? केवल शब्द की सीमा तक शब्द को रखना बहुत-बहुत छोटी बात है। ज्यादा संबंध आदमी की भावना से होता है।

शब्द तो अपने आपमें जड़ है। सत्य का पहला प्रकार है–जनपद सत्य। अलग-अलग क्षेत्रों में एक ही पदार्थ को अलग-अलग नाम से बोलना, जैसे तमिल में पानी को तनी, कन्नड़ में नीरू या संस्कृत में वारि बोलना। सब सत्य है। दूसरा है–सम्मत सत्य–जैसे पंकज यानी कीचड़ में पैदा होना। कीचड़ में कमल भी पैदा होता है और मेंढ़क भी। पर यहाँ पंकज शब्द कमल के लिए कहा गया है। मेंढ़क के लिए पंकज बोलना गलत हो जाता है।

तीसरा सत्य है–स्थापना। जैसे शतरंज के मोहरों को हाथी, ऊँट, घोड़ा आदि कहते हैं। चौथा है–नाम सत्य। जैसे नाम तो है, लक्ष्मीधर पर है, वो गरीब। पाँचवाँ सत्य-रूप-सत्य। जैसे कोई पुरुष संन्यासी का वेष पहन ले तो उसे साधु बोल देना। भावना में छलना नहीं है, सहज रूप में बोल दिया। सातवाँ है–प्रतीक सत्य। सापेक्ष बात होती है, किसको हल्का-भारी या छोटा-बड़ा कहना ये सापेक्ष बात हो जाती है।

सातवाँ सत्य है–व्यवहार सत्य। व्यवहार की भाषा बोलना, जैसे गाँव आ गया। पर वास्तव में गाँव नहीं आया, हम गाँव में आ गए हैं। आठवाँ सत्य है–भाव सत्य-पर्याय के संदर्भ में सत्य। जैसे दूध सफेद है पर निश्चय में तो दूध में पाँचों वर्ण हैं। नौवाँ प्रकार है–योग सत्य। अरे मुखपति वाले इधर आओ। है, तो आदमी पर मुखपति लगी होने से मुखपति से पहचान हो रही है। दसवाँ प्रकार है–औपम्य सत्य। उपमा लगाकर बोलना। जैसे नयन कमल, मुखारविंद।

सत्य में शब्द गौण है, भावना मुख्य है। कोई छलकपट से बात बोलता है, तो वह अर से सत्य है, पर उसके भाव असत्य हैं। सच्चाई में सरलता का महत्त्व है। सरलता है, तो पवित्रता रह पाएगी। शब्द और वाक्य इन दोनों को ध्यान में रखते हुए सत्य का प्रयोग करेंगे तो हम सत्य के संदर्भ में पाप मुक्त रह सकेंगे।

साधु के पाँच महाव्रत होते हैं। दूसरा महाव्रत है–सर्व मृषावाद विरमण। साधु की भावना सही और कपट रहित होनी चाहिए। भावों में शांति-निष्कपटता रहे। लोभ, हास्य भागों में न हो। शब्द का बड़ा आधार है, भाव-शुद्धि। आदमी ध्यान रखे कि मैं ऐसा शब्द बोलूँ कि जो बात मैं कहने जा रहा हूँ वो सामने वाला पकड़ सके। श्रोता भी समझे कि वक्ता का आशय क्या है?

एक शब्द के अनेक शब्दार्थ किए जा सकते हैं। जैसे सेन्धव। सेन्धव घोड़े को भी कहते हैं और नमक को भी कहते हैं। अनेकार्थ से गलतफहमी हो सकती है। भाषा जगत में एक शब्द का एक ही अर्थ हो तो सुगमता हो जाए। शास्त्रकार ने सत्य के दस प्रकार बताकर अर्थ और शब्द का महत्त्व समझाया है।

बड़ी दीक्षा - छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि एक सप्ताह पहले विकास महोत्सव के दिन तेरह व्यक्तियों ने मुनीत्व स्वीकार किया था। एक संत और बारह साध्वियाँ हैं। एक सप्ताह बाद बड़ी दीक्षा या स्थानांतरण सा होता है। प्रमोशन सा होता है। सामायिक चारित्र से प्रमोशन-उन्नयन और छेदोपस्थापनीय चरित्र में प्रवेश होता है।

पूज्यप्रवर ने तेरह नव-दीक्षितों को पाँच महाव्रत एवं छठा व्रत रात्रि भोजन विरमण का तीन करण-तीन योग से आजीवन त्याग करवाकर छेदोपस्थापनीय चारित्र में स्थापित किया। आत्महित के लिए स्वीकार करवाया।

सभी की अच्छी खूब साधना चलती रहे। पूज्यप्रवर ने बड़ी-छोटी तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि नंदी सूत्र आगम व अभिधान चिंतामणी ग्रंथ में बुद्धि के आठ गुण बताए हैं। सुश्रुषा (सुनने की इच्छा) श्रवण, ग्रहण, धारण, अह, (युक्ति संगत तर्क), अपोह (पोषपूर्ण पक्ष का खंडन) अर्थ ज्ञानं (पदार्थ का विशेष ज्ञान) और तत्त्व ज्ञानं (वास्तविक का ज्ञान करना) को विस्तार से समझाया।

बड़ी दीक्षा से पूर्व नव दीक्षित साध्वी मेघप्रभा जी, साध्वी पार्श्वप्रभा जी, साध्वी सुश्रुतप्रभा जी एवं सभी नवदीक्षित साध्वियों ने समूहरूप में स्वाध्याय और अनुभव विषय पर बहुत सुंदर प्रस्तुति व अपनी भावना-अनुभव अभिव्यक्त की। नव दीक्षित मुनि मोक्षकुमार जी ने भी अपने पूर्व संस्मरण व नए अनुभव अभिव्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आमेट निवासी उमा देवी हिरण ने ३१ की तपस्या, सागरमल रांका-कारोई २८ की तपस्या, राकेश नौलखा-गंगापुर २७ की, नीलू मेहता-उदयपुर २४ की तपस्या के पूज्यप्रवर ने प्रत्याख्यान लिए।

व्यक्ति महात्मा नहीं बन सके तो सदात्मा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सपना लेना, कल्पना करना एक बात है। कल्पना संकल्प बन जाए तो आचार भी अच्छा बन सकता है। विचार है, उस पर आस्था मजबूत हो जाए, अनुप्रेक्षा से, चिंतन से, प्रेरणा से या भावशुद्धि से संस्कार मजबूत बन जाते हैं, तो आचार भी अच्छा बन सकता है। बच्चों को भी प्रेरणा दें तो उनमें अच्छे संस्कार आ सकते हैं। यह एक दृष्टांत से समझाया कि लोभ या बाहरी आकर्षण से कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए।

आर०एस०एस० के सरसंघ संचालक मोहन भागवत का आना हुआ है। आपके विद्या भारती आदि विद्यालयों में संस्कार संपोषण का कार्य भी होता है। हर कोई महात्मा तो नहीं बन सकता पर सदात्मा तो बने तो भारत अच्छा देश बन सकता है। संस्कार निर्माण का कार्य और चलता रहे। भारत में अनेक धर्मों के ग्रंथ है, उनके ज्ञान को लिया जाए। सच्चाई-अच्छाई जहाँ से भी मिले, उसका आदर करना चाहिए। यथार्थ जहाँ भी मिले वो ग्रहण करने का प्रयास हो। आस्था और आचार सही हो सम्यक् आस्था का होना जरूरी है।

भारतीय प्राच्य साहित्य में जो बातें हैं, वो बड़ी मार्गदर्शक हैं। उनसे हमें पथदर्शन मिल सकता है। अच्छे ढंग से वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में वो बातें समझाई जाती हैं, तो जनता को सन्मार्ग की प्राप्ति हो सकती है। भागवत साहब तो एक मनीषी व्यक्तित्व हैं। भागवत साहब भी आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक मूल्यों की सेवा करते रहें। व्यक्तिगत जीवन में भी आध्यात्मिकता की औतश्रोतता रहे, मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति अपने आपमें एक विशिष्ट संस्कृति है। इसमें ऋषियों-मुनियों, संतों का महत्त्व है। जहाँ संत रहते हैं, वहाँ तीर्थ बन जाता है। तीर्थ अपने आपमें पवित्र होता है। पवित्रता का प्रशिक्षण पाने के लिए लोग वहाँ आते रहते हैं। शास्त्रों का, धर्म का सार यही है कि जो व्यवहार अपने से प्रतिकूल हो, स्वयं को अच्छा न लगे वो तुम दूसरों के प्रति भी मत करो।

आर०एस०एस० सर संघचालक मोहन भागवत ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि यहाँ तो मैं कई अच्छी बातें सुनने के लिए आता हूँ। इधर अध्यात्म का काम है, उधर भौतिक जगत का काम है। अपने देश में सब बातों का आधार अध्यात्म ही है। एक-दूसरे से मिलकर आत्मीय भाव से आगे बढ़ना ये धर्म का काम कहा गया है। उस धर्म का श्रीमद्भागवत गीता में चार रूप बताए गए हैं–सत्य, अहिंसा (करुणा), सूचिता और तपस।

सब धर्मों में एक ही बात कही गई है। एक को सुन लो तो सबका ज्ञान हो जाता है। हमें तो दूषित वातावरण में रहना पड़ता है, इसलिए एक तरह से हम सफाई कर्मचारी हैं। सफाई करनी पड़ती है। गीता में वही बात है, जो आचार्यश्री ने बताई है। मन को अच्छी बातों में लगाएँ। सत्संगत से मुमुक्षुत्व प्राप्त हो जाता है।

व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने मोहन भागवत का एवं उनके साथ आगंतुक सभी महानुभावों का स्वागत एवं मोमेंटो व साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

न्याय निष्पक्ष एवं विवेकपूर्ण होना...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा छठा जजेज एवं एडवोकेट्स कॉन्फ्रेंस–Judicial Roll in changing world बदलती दुनिया में न्याय की भूमिका का पूज्यप्रवर की सन्निधि में आयोजन किया। पूज्यप्रवर ने मंगल आशीर्वाद फरमाया कि संस्कृत कोष में दो शब्द आते हैं–समज और समाज। पशुओं का समूह समज कहलाता है, अन्य प्राणियों जैसे मनुष्य का समूह समाज हो जाता है।

जहाँ समाज होता है, बहुत लोगों को साथ रहने का मौका मिलता है, तो वहाँ नियम, व्यवस्था कानून की भी आवश्यकता रहती है। देवलोक में भी इसी तरह की व्यवस्था रहती है। एक अहमिन्द्र की व्यवस्था होती है, एक इंद्र की भी व्यवस्था होती है। यहाँ पृथ्वी पर पहले यौगलिक होते थे। उनमें कोई कलह नहीं होता था। धीरे-धीरे कलह बढ़ा तो दंड व्यवस्था बढ़ी। हाकार, माकार और धिक्कार की दंड व्यवस्था चलती थी।

बाद में राजा प्रथा चली। लोकतांत्रिक प्रणाली हो या राजतांत्रिक प्रणाली हो, दोनों का लक्ष्य एक ही है कि जनता सुखी रहे। व्यवस्था ठीक चले। राजा या सरकार के तीन कर्तव्य होते हैं–सज्जनों की रक्षा करना, असज्जनों पर अनुशासन करना और आश्रित-प्रजा का भरण-पोषण करना। लोकतंत्र में न्यायपालिका होती है। दंड व्यवस्था भी होती है। साधु संस्था में भी दंडस्वरूप प्रायश्चित की व्यवस्था होती है।

न्यायाधीश की व्यवस्था होती है, उसमें भी आग्रह न हो। भयमुक्त होकर न्याय करें। एडवोकेट भी न्याय संगत दलील करें। आदमी विवेक से अपना निष्कर्ष निकाले।

टीपीएफ की ओर से एडवोकेट राज सिंघवी,

दिल्ली सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट हर्ष सुराणा, अनिल लोढ़ा, राकेश नौलखा ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

टीका शिविर का आयोजन

तंडियारपेट।

महावीर इंटरनेशनल चेन्नई मेट्रो एवं तेरापंथ ट्रस्ट द्वारा कोविड वैक्सीन शिविर तेरापंथ भवन, तंडियारपेट में ग्रेटर चेन्नई कॉरपोरेशन के सहयोग से टीका लगाया गया। कुल १५० लोगों को प्रथम व दूसरा डोज़ कोविड टीका निःशुल्क लगाया गया। चेयरमैन ज्ञानचंद कोठारी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कोषाध्यक्ष मुकेश तथा डायरेक्टर्स पूनमचंद मांडोत, अजीत नागौरी, ज्ञानचंद चोरड़िया, धर्मेन्द्र सुंदेशा आदि सदस्यों ने सेवाएँ प्रदान की।

शरीर को साधना करने का साधन बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २१ सितंबर, २०२१

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी का शरीर औदारिक होता है। जैन वाङ्मय में शरीर के पाँच प्रकार बताए गए हैं–औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस और कार्मण शरीर। इन पाँचों शरीरों में से संसारी अवस्था में तेजस और कार्मण शरीर तो प्रत्येक जीव में रहते हैं।

बाकी तीन शरीर में से औदारिक या वैक्रिय शरीर जीव के उस जीवनकाल में मूलरूप में रहते हैं। मृत्यु के साथ मूल स्थूल शरीर साथ में नहीं जाता है। सूक्ष्म और सूक्ष्मतर शरीर तो आगे भी जाते हैं। देवता और नारक में वैक्रिय शरीर होता है। वायुकाय को छोड़ मनुष्य व तिर्यंच प्राणियों में औदारिक शरीर होता है। आहारक शरीर तो विशेष प्रयोजन में ही होता है।

हमारा वर्तमान औदारिक शरीर जो स्थूल रूप में है, वो साधना में काम आ सकता है। धर्म करने में साधन बन सकता है। यह आदमी पर निर्भर करता है कि इस स्थूल शरीर का धर्म करने में या पाप करने में कितना उपयोग करता है। आदमी शरीर के विभिन्न अंगों को अलंकरणों से विभूषित भी करता है। ये बाह्य अलंकरण है। इनसे शरीर को अलंकृत करने का प्रयास किया जाता है।

और भी कोई आभूषण है, क्या? जिससे शरीर की विभूषा के साथ में आत्मा के कल्याण की भी बात हो। आध्यात्मिक गुणात्मक आभूषण कौन से हैं, यह एक संस्कृत श्लोक से समझाया। श्लोककार ने कहा है कि जो प्रकृति से महान लोग हैं, उनका मंडन-आभूषण बिना ऐश्वर्य के भी होता है, वो क्या है?

हाथ में कंगन भी पहने जाते हैं, पर हाथ का आभूषण है–त्याग, दान। आम जनता को क्या मतलब कि आपके कंगन कैसे हैं। आप जनता के हित के लिए क्या करते हैं, यह महत्त्व रखता है। साधु को शुद्ध दान दो। भाव भक्ति से दान देना हाथ का आभूषण है। लौकिक व्यवहार में भी दान को महत्त्व मिलता है। आध्यात्मिक संदर्भों में साधु को शुद्ध दान देना है। भोजन-पानी के साथ साधु को कोई अपनी संतान भी सौंप दे दीक्षा के लिए तो वो बड़ा दान होता है।

सिर का आभूषण है–गुरु के चरणों में प्रणाम करना। मुख का आभूषण है–जबान से सच्ची वाणी बोलना। कोई सोने के दाँत लगवा ले तो वे भले ही दिखने में अच्छे हों, पर कष्ट का कारण बन सकते हैं। कान का आभूषण कुंडल नहीं है, आंतरिक आभूषण है, श्रुत को सुनकर ग्रहण करना। हृदय का आभूषण है–दिल साफ है, हृदय की वृत्ति स्वच्छ है। गले का हार हृदय का बाह्य आभूषण हो सकता है।

भुजाओं का आभूषण है–पौरुष, विजय प्राप्त करने वाला पौरुष। दूसरों की आध्यात्मिक सेवा करना तो पौरुष का भी पौरुष हो जाता है। आभूषण पर आभूषण हो जाता है। ये छः आभूषण बताए हैं। ये आभूषण हमारे शरीर में हैं, तो बाह्य आभूषण की अपेक्षा नहीं रहती। बाह्य आभूषण तो पैसे से खरीदे जा सकते हैं, पर इन आंतरिक आभूषणों के लिए साधना करनी होती है।

वस्तु का दान देना एक बात है, पर दान देने की भावना होना विशेष बात है। बाह्य आभूषण भारभूत है। ये अध्यात्म के आभूषण कल्याणकारी होते हैं। एक साधु भी दूसरे साधु को दान दे सकता है। योग्य सामग्री के सिवाय, किसी को ज्ञान देना भी दान होता है। अभयदान देना तो श्रेष्ठतम, बहुत ऊँचा दान है।

मुख से आदमी वाणी का अनावश्यक खर्च न करे। परिमित बोलें, जो बोले वो भी अमृतमय होना चाहिए। झूठ या कटु बोलने से वाणी विकृत हो सकती है। वाणी विकृत नहीं, संस्कृत रहे। कटुता और झूठ ये वाणी की विकृति के अंग हैं।

ये जीवन व्यवहार से जुड़ी हुई बातें हैं। आदमी दूसरों की निंदा में अनावश्यक रस न लें। धर्म की अच्छी बातें सुनें। अच्छी सामग्री हमारे भीतर में जा सकेगी। पौरुष का भी दुरुपयोग न हो। ये आभूषण पैसे से मिलने वाले नहीं हैं। खुद की साधना खुद के संस्कार बनें तो इन्हें पहन सकते हैं। सारे गहने पहन भी न सकें तो जितने पहन सके पहने ताकि कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

७२वें अणुव्रत अधिवेशन की पूर्णाहूति पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुई। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि अणुव्रत अधिवेशन का प्रसंग है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय में इसकी शुरुआत हुई थी। अणुव्रत आंदोलन आज एक व्यापक कार्यक्षेत्र लिए हुए है। नास्तिक आदमी भी अणुव्रत का पालन कर सकता है, अणुव्रत का कार्य कर सकता है।

इस बार अधिवेशन लीक से हटकर अणुविभा के स्थान में हुआ है। अणुविभा बहुत वजनदार संस्था बनकर अणुव्रत का कार्य कर रही है। अणुविभा नए रूप में नए दायित्वों के रूप में काम करे। अणुव्रत की बात किसी भी मंच पर की जा सकती है। चुनाव शुद्धि व नशामुक्ति का अभियान चलता रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि शब्द या संकेत से जो ज्ञान होता है, वह श्रुत ज्ञान होता है। श्रुत ज्ञान त्रैकालिक होता है। अक्षर के तीन प्रकार–संज्ञा (आकृति), व्यंजनाक्षर (उच्चारण) और लब्धाक्षर (श्रुत ज्ञानावरण का क्षयोपशम) को विस्तार से समझाया।

साध्वीवर्या जी ने मन को निर्मल बनाने के बिंदुओं को एक गीत–'मन निर्मलता को तुम प्राप्त करो,' के सुमधुर संगान से समझाया। साध्वी प्रांजलयशा जी ने सुमधुर गीत व अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

अणुविभा के मंत्री भीकमचंद सुराणा एवं अध्यक्ष संचय जैन ने अधिवेशन की रूपरेखा को बताया। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार जी ने अणुव्रत की गतिविधियों के बारे में बताया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

महिला मंडल के विविध आयोजन

भज मन भिक्षु स्वाम भक्ति संध्या

नोएडा।

आचार्य भिक्षु चरमोत्सव की पूर्व संध्या पर नोएडा महिला मंडल ने भजमन भिक्षु स्याम भक्ति संध्या का आयोजन किया। जिसमें अभातेममं की तत्त्वज्ञान निर्देशिका पुष्पा बैंगानी की गरिमामयी उपस्थिति रही। उन्होंने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर कार्यक्रम का आगाज किया।

पूर्वाध्यक्ष संतोष बैद ने मंगलाचरण किया। अभातेममं की कार्यसमिति सदस्य हरियाणा एवं यूपी प्रभारी अर्चना भंडारी ने सभी आगंतुकों का अभिनंदन किया। वर्तमान अध्यक्ष कविता लोढ़ा ने सभी का स्वागत किया एवं आमंत्रित गायक कलाकारों का परिचय दिया। कार्यक्रम में आमंत्रित कलाकार के रूप में विकास सिंघी-दिल्ली, प्रियंका छाजेड़-गंगाशहर, ममता मालू-नोएडा उपस्थित थे।

नोएडा से श्रावक-श्राविका समाज से रेणु बैद, सुमन बोथरा, कमला बैद, रेश्म बांठिया, सोनिका बैंगानी, अंकिता मालू, प्रसन्न सुराणा, महावीर लोढ़ा, श्वेता बैद, नविता जैन, प्रेम सेखानी, दृष्टि बैद, दिशा, दृष्टि लोढ़ा, आयुषी बैंगानी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। जिसमें से ३ कन्या मंडल की कन्याएँ भी सम्मलित थी।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, नोएडा के मंत्री सुरेंद्र बैद, वरिष्ठ श्रावक मूलचंद कठोतिया, पन्नालाल बरमेचा, महिला मंडल के पूर्वाध्यक्ष, परामर्शक एवं सदस्यों सहित लगभग ६० महानुभावों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन व आभार मंत्री दीपिका चोरड़िया ने किया।

वैक्सीनेशन शिविर का आयोजन

सुजानगढ़।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा यंग्स क्लब में वैक्सीनेशन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ३३० जनों को वैक्सीन लगाई गई। महिला मंडल की अध्यक्ष रेखा राखेचा ने बताया कि दस्साणी भवन में साध्वी संघप्रभा जी से मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात शुरु हुए वैक्सीनेशन शिविर का सभापति नीलोफर गौरी व अभातेममं की सदस्या डॉ० वंदना बरड़िया ने शिविर का शुभारंभ किया।

पार्षद मधु बागरेचा ने बताया कि वैक्सीनेशन के लिए राजकीय बगड़िया उपजिला अस्पताल से आए स्टाफ तेजपाल, अजय स्वामी, यशपाल स्वामी, अमरचंद, साजिदा शेख, मोहनराम ने ३३० जनों को कोविशील्ड की प्रथम व द्वितीय डोज लगाई। वैक्सी के लिए आए स्टाफ का महिला मंडल द्वारा सम्मान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष रेखा राखेचा, मंत्री सुमन चोरड़िया, सपना मालू, मधु भूतोड़िया, प्रभा कोठारी, सुखराज बैद, गुलाब भंसाली, परामर्शक कमलेश सिंघी, विजया रामपुरिया व पूरी कार्यकारिणी टीम, तेरापंथ सभा, तेयुप के कार्यकर्ताओं ने शिविर को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। शिविर में विशेष योगदान रहा राजकुमारी डूंगरवाल, मयंक चोरड़िया, जयश्री कुंडलिया का।

ज्ञानशाला दिवस

कोलकाता।

वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल में ज्ञानशाला दिवस साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री जी ने महती कृपा करके हमें अपना अमूल्य समय दिया और पूरा कार्यक्रम स्वयं अपने निर्देशन में करवाया। अनेक क्षेत्रीय सभाओं के अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

प्रशिक्षिकाओं ने मंगलचाचरण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ किया। बच्चों ने भी अपनी सुंदर प्रस्तुति दी। स्थानीय अध्यक्ष ने अपना वक्तव्य दिया। प्रेमलता चोरड़िया ने अपने वक्तव्य में सभी से निवेदन किया कि बच्चों को ज्ञानशाला में भेजें एवं जहाँ ज्ञानशाला नहीं है वहाँ खोलने का प्रयास करें। बच्चों को सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया। संक्षिप्त में टीवी, प्रोजेक्टर द्वारा अन्य क्षेत्रों की प्रस्तुतियों की वीडियो क्लिप दिखाई गई।

दोपहर में पूरे वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल में ऑनलाइन कार्यक्रम रखा गया। जिसमें महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल, प्रधान न्यासी भंवरलाल बैद सहित सभी सभा के पदाधिकारी, प्रशिक्षिका, ज्ञानार्थी और अभिभावक भी उपस्थित थे।

योगक्षेम

अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

✲ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
✲ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
✲ श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
✲ श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
✲ श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
✲ श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
✲ श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
✲ श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
✲ श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

पर्युषण महापर्व के अवसर पर बही धर्म की गंगा

गंगाशहर।

खाद्य संयम दिवस : साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का प्रथम दिन मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि जैन धर्म का यह महान पर्युषण पर्व एक अलौकिक पर्व है। यह धर्म आराधना का पर्व है। इसमें हमें अपने आपको अवलोकन करना है। साध्वी आत्मयशा जी ने केंद्र द्वारा निर्देशित पर्युषण के दौरान करणीय त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी। साध्वी उन्नतयशा जी, साध्वी अक्षयप्रभा जी एवं साध्वी रम्यप्रभा जी ने विचार प्रकट किए।

प्रथम दिवस में रात्रिकालीन कार्यक्रम में तेरापंथ के भाष्यकार जयाचार्य साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण द्वारा किया गया। सभी साध्वियों ने रोचक प्रस्तुति के माध्यम से आचार्यश्री जयाचार्य जी के जीवन का परिचय दिया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

स्वाध्याय दिवस : द्वितीय दिवस स्वाध्याय दिवस के रूप में सेवाकेंद्र व्यवस्थापिका साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वी पावनप्रभा जी ने अपने स्वाध्याय का महत्त्व बताते हुए सर्वजन को स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित किया। साध्वियों द्वारा सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी गई। साध्वी आत्मयशा जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

सामायिक दिवस : अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप ने जैनों के प्रमुख पर्व पर्युषण महापर्व के तीसरे दिन अभिनव सामायिक का आयोजन किया। साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में कुल ७०० सामायिक हुई। तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़ ने कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल और संपूर्ण समाज का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

वाणी संयम दिवस : पर्युषण महापर्व का चतुर्थ दिवस वाणी संयम दिवस के रूप में साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वी पावनप्रभा जी ने वाणी संयम का महत्त्व बताते हुए कहा कि वाणी का संयम मनुष्य को अनेक समस्याओं से बचाता है। जिस व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान दिखाई देती है, वह आनंदित व प्रसन्न जीवन जीता है। पवित्र आत्मा वाले व्यक्ति के मुखमंडल पर सहज ही मुस्कान का सागर लहराता है। वाणी संयम दिवस पर साध्वी रम्यप्रभा जी ने कहा कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय देती है भाषा। साध्वी शुक्लप्रभा जी ने भी अपने विचारों को गीतिका के माध्यम से प्रबोधन किया। साध्वी पावनप्रभा जी ने तपस्या करने वालों को प्रत्याख्यान करवाया।

तेरापंथ सभा के मंत्री रतनलाल छलाणी ने बताया कि तेरापंथ भवन, गंगाशहर में पर्युषण पर मुनि शांतिकुमार जी के सान्निध्य में अखंड नवकार महामंत्र के जप तथा सायंकालीन प्रतिक्रमण में अनेक श्रावक-श्राविका भाग लेकर लाभान्वित हो रहे हैं।

अणुव्रत चेतना दिवस : पर्युषण महापर्व का पंचम दिवस अणुव्रत चेतना दिवस के रूप में सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वी पावनप्रभा जी ने अणुव्रत का अर्थ बताते हुए कहा कि अणुव्रत का अर्थ है–छोटे-छोटे संकल्प। छोटे-छोटे संकल्पों द्वारा अपनी इच्छाओं एवं वासनाओं को नियंत्रित करना ही अणुव्रत है। साध्वी प्रभाश्री जी ने अपना उद्‌बोधन दिया तथा साध्वी अक्षयप्रभा जी ने प्रतिक्रमण के बारे में जानकारी दी। ज्ञानशाला संयोजक जतन संचेती ने ज्ञानशाला के बारे में जानकारी दी। तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष प्रकाश भंसाली ने अणुव्रत पर अपने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा ने अणुव्रत प्रबोध प्रतियोगिता की जानकारी दी। तेरापंथ भवन में निःशुल्क वेक्सीनेशन शिविर सरकार के सहयोग से लगाया गया। पार्षद सुमन छाजेड़, शिवजी पडिहार, जेठमल व सरिता नाहटा, इंदर राव व मघाराम नाई, तेयुप, किशोर मंडल व कन्या मंडल के सदस्यों ने भी व्यवस्था बनाने में सहयोग किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने सभी का आभार जताया।

जप दिवस : साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में जप दिवस मनाया गया। इस असर पर साध्वी दीपमाला जी ने जप का महत्त्व बताते हुए कहा कि जप करने से व्यक्ति की आंतरिक शुद्धि होती है। नमस्कार महामंत्र में अरिहंतों, सिद्धा, आचार्यों, उपाध्यायों और लोक के सब साधुओं को नमस्कार किया गया है। साध्वी पावनप्रभा जी ने अपना उद्‌बोधन दिया। साध्वी अक्षयप्रज्ञा जी ने प्रतिक्रमण के बारे में बताते हुए मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करने वाला बताया।

तेयुप के मंत्री देवेंद्र डागा ने तेयुप द्वारा आयोजित होने वाली ऑनलाइन प्रतियोगिता 'मैं हूँ ज्ञानवान' के बारे में विस्तृत जानकारी दी। रात्रिकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत धार्मिक गीतों का रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

ध्यान दिवस : साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में ध्यान दिवस मनाया गया। साध्वीश्री जी ने मनुष्य जीवन को अनमोल बताते हुए कहा कि मनुष्य जन्म बहुत मुश्किल से प्राप्त होता है। मानव भव को प्राप्त कर हमें अपनी आत्मा का कल्याण करना चाहिए। इस अवसर पर साध्वी गौरवप्रभा जी ने ध्यान का महत्त्व बताते हुए कहा कि आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना ध्यान है।

संवत्सरी महापर्व : पर्युषण महापर्व का आठवाँ व सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दिन संवत्सरी महापर्व के रूप में मुनि शांतिकुमार जी एवं साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। मुनि शांति कुमार जी ने कहा कि संवत्सरी महापर्व एक आध्यात्मिक महापर्व है। इस दिन प्रत्येक व्यक्ति अध्यात्ममय हो जाता है। जैन धर्म का यह सबसे बड़ा पर्व है। मुनि श्रेयांश कुमार जी ने सुमधुर गीतिकाओं की प्रस्तुति दी।

साध्वी पावनप्रभा जी ने क्षमा को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कि क्षमापना का महत्त्वपूर्ण अवसर हमारे सामने है। साध्वी आत्मयशा जी व साध्वी रम्यप्रभा जी ने मंगलाचरण किया। साध्वी गौरवप्रभा जी, साध्वी उन्नतयशा जी व साध्वी अक्षयप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए। तेरापंथी सभा, गंगाशहर के अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने उपस्थित सभी तपस्वियों का स्वागत व तपस्या का अनुमोदन किया। उन्होंने गंगाशहर जैन तेरापंथ समाज जनगणना कार्य के बारे में बताया।

क्षमापना समारोह : मुनि शांतिकुमार जी एवं साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में क्षमापना समारोह मनाया गया। मुनि शांति कुमार जी ने क्षमा का महत्त्व बताते हुए कहा कि क्षमा वीर व्यक्ति का आभूषण है। आज के दिन हम ८४ लाख जीवयोनियों से क्षमायाचना करते हैं। क्षमा के द्वारा हम मोक्ष मार्ग की ओर आगे बढ़ सकते हैं। साध्वी पावनप्रभा जी ने भी क्षमापना का अर्थ बताते हुए इस अवसर की सार्थकता प्रस्तुत की तथा सभी से क्षमायाचना की। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि श्रेयांस कुमार जी द्वारा प्रस्तुत क्षमा गीत से हुई।

तेरापंथी सभा, गंगाशहर के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, मंत्री रतनलाल छलाणी, जैन महासभा के अध्यक्ष व तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी जैन लूणकरण छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष महावीर रांका, मंत्री हंसराज डागा, तेरापंथ महिला मंडल व अणुव्रत समिति की ओर से संतोष बोथरा, तेयुप के ललित राखेचा, टीपीएफ के अध्यक्ष मिलाप चोपड़ा, तेरापंथ किशोर मंडल के संयोजक कुलदीप छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी से क्षमायाचना की।

> ✦ *जितना-जितना आदमी के जीवन में संयम बढ़ता है, त्याग बढ़ता है, उससे धर्म की पुष्टि होती है और जितना जीवन में असंयम बढ़ता है, उससे अधर्म की वृद्धि होती है।*
>
> – आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

गृह प्रवेश

जयपुर।

प्रज्ञा-विकास चोपड़ा के नूतन आवास जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कार्यक्रम संस्कारक राजेश धाड़ेवा ने पूरे विधि-विधान से मंत्रोचार का संगान करते हुए संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप जयपुर अध्यक्ष राजेश छाजेड़, निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी, मंत्री सुरेंद्र नाहटा, जैन संस्कार विधि संयोजक विनीत सुराणा एवं तेयुप सदस्यों ने परिषद परिवार की ओर से चौपड़ा परिवार को मंगल भावना पत्रक भेंट किया।

नामकरण संस्कार

अहमदाबाद।

कविता-गौतम चोरड़िया के नवजात सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक विक्रम दुगड़, आनंद बोथरा ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपादित किया।

तेयुप अध्यक्ष ललित बेंगवानी ने चोरड़िया परिवार बो बधाई प्रेषित की। तेयुप की ओर से चोरड़िया परिवार को मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। विक्रम दुगड़ ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कपिल पोखरना ने किया।

गृह प्रवेश

जयपुर।

विनिता-विनीत सुराणा के नूतन आवास का जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कार्यक्रम संस्कारक अविनाश नाहर व संस्कारक राजेश धाड़ेवा ने पूरे विधि-विधान से मंत्रोच्चार का संगान करते हुए संपन्न करवाया।

तेयुप जयपुर अध्यक्ष राजेश छाजेड़, उपाध्यक्ष सुनील लुनिया, मंत्री सुरेंद्र नाहटा, जैन संस्कार विधि संयोजक श्रेयांस बैंगानी व विनीत सुराणा, कार्यसमिति सदस्य नवीन बोकड़िया, कुलदीप बैद ने परिषद परिवार की ओर से सुराणा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

प्रतिष्ठान पूजन

साउथ हावड़ा।

मनीष जैन बोरड़ के नूतन प्रतिष्ठान का पूजन जैन संस्कार विधि से अभातेयुप संस्कारक, निवर्तमान अध्यक्ष पवन कुमार बैंगाणी एवं संदीप नाहर ने विधिवत मंत्रोच्चार से करवाया। तेयुप के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने मंगलभावना पत्र भेंट कर अपनी भावना व्यक्त की। तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुशील गीड़िया ने शुभकामना प्रेषित की। कार्यक्रम में अभातेयुप के अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

आभार ज्ञापन संयोजक सुनीत नाहटा ने किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक हितेंद्र बैद ने किया।

नामकरण संस्कार

पूर्वांचल।

चुरु निवासी-पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी राजीव-अंकिता बोथरा के आँगन में पुत्री का जन्म हुआ। जिसका नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक व परिषद के कार्यसमिति सदस्य लोकेश गोलछा द्वारा संपूर्ण मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता के उपाध्यक्ष 'द्वितीय एवं जैन संस्कार विधि के प्रभारी धर्मेन्द्र बुच्चा ने परिषद की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना यंत्र प्रदान किया। साथ ही बोथरा परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नूतन गृह प्रवेश

रायपुर।

रायपुर निवासी राम कुमार सिंधी के नूतन गृह का प्रवेश पूजन जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक सूर्यप्रकाश बैद ने संस्कार विधि संपन्न कराई। संस्कार विधि पर तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा, उपाध्यक्ष सुमित जैन, जैन संस्कार विधि प्रभारी सुशील डागा ने अपनी सहभागिता दर्ज की।

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

ध्यान प्रशिक्षण की व्यवस्था

साधक गुरु सान्निध्य में निशिदिन करे निवास।
तब ही उसकी साधना पाए सतत विकास।।
गमन-स्थान-आसन-शयन-भोजन-भाषण योग।
दिन-निशि-चर्या में रहे, गुरु-इंगित अनुयोग।।

उत्तर : *(क्रमशः)* एक अध्यात्म साधक के सामने यह सबसे बड़ी समस्या है कि वह इस जीवसंकुल लोक में अहिंसक कैसे रह सकता है? अहिंसा उसका आदर्श है, पर हिंसा की अनिवार्यता को वह कैसे टाल सकता है। इसी विकल्प से आहत होकर शिष्य ने एक प्रश्नावली उपस्थित करते हुए पूछा–

कहं चरे? कहं चिट्ठे? कहमासे? कहं सए?
कहं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधई।।

भगवान! मैं कैसे चलूँ? कैसे खड़ा रहूँ? कैसे बैठूँ? कैसे सोऊँ? कैसे खाऊँ? और कैसे बोलूँ? जिससे पाप-कर्म का बंधन न हो।

भगवान ने शिष्य की मनःस्थिति को पढ़ा, उसकी उलझन को समझा और उसका मार्गदर्शन करते हुए कहा–

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं न बंधई।।

शिष्य! संयम से चलो, संयम से ठहरो, संयम से बैठो, संयम से सोओ, संयम से खाओ और संयम से बोलो। इस प्रकार अपनी हर क्रिया में संयम रखते हुए तुम पाप-कर्म के बंधन से बचे रह सकते हो।

संयम की स्वीकृति के बाद पल-पल जागरूकता रहे, हर गतिविधि संयम से अनुप्राणित रहे तो समूचा जीवन संयम से भावित हो जाता है। अन्यथा संयम की सम्यक् प्रतिपत्ति नहीं होती। इसी प्रकार एक या दो घंटा ध्यान साधना होती है, बाकी का समय चंचलता में गुजरता है तो ध्यान की प्रतिपत्ति नहीं हो सकती। ध्यान से चित्त पूरा भावित नहीं होता है तो चर्या में ऊर्जा का संप्रेषण नहीं हो सकता। जिस समय जीवन की संपूर्ण चर्या योग बन जाती है, तब ही व्यवहार में जागरूकता फलित हो सकती है। इस दृष्टि से यह निष्कर्ष निकलता है कि गुरु का अल्पकालीन सान्निध्य उसी स्तर पर परिणाम लाता है और दीर्घकालीन सान्निध्य का प्रभाव कुछ विलक्षण होता है। ध्यान की अग्रिम भूमिकाओं पर आरोहण करने के लिए गुरु के सतत सान्निध्य की अपेक्षा हितप्रद नहीं हो सकती।

ध्यान का गुरुकुल

अंकन भी होता रहे, है विकास या ह्रास?
पाकर समुचित प्रेरणा, कभी न बने निराश।।
गुरुकुल शिक्षा साधना-केंद्र रहे प्राचीन
भारत में थी पद्धति वह कितनी शालीन?
देते पथदर्शन सदा, गुरुकुल में गुरुदेव।
पाता प्रमुदित शिष्य भी, हर शिक्षा स्वयमेव।।
जीवन की हर वृत्ति का, रखते पूरा ध्यान।
अनुशासित संयत सजग, बनता शिष्य महान।।

प्रश्न : साधक ध्यान का प्रशिक्षण पाता है और उसके अनुसार प्रयोग करता है। प्रशिक्षण और प्रयोग के बाद परीक्षण का कोई क्रम है क्या? परीक्षण के अभाव में किसी भी साधक को अपनी प्रगति या प्रतिगति की जानकारी नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में साधना-मार्ग में समागत अवरोध को कैसे हटाया जा सकता है?

उत्तर : प्रत्येक प्रवृत्ति की सफलता और असफलता के लिए उसका मूल्यांकन होना बहुत जरूरी है। धर्म के क्षेत्र में तो ऐसा होना ही चाहिए। कोई व्यक्ति धर्म की साधना करे और उसका मूल्यांकन न हो तो उसे अपनी प्रवृत्ति की सार्थकता का पता ही नहीं लग सकता। किसी भी साधना का सही-सही बोध उसके मूल्यांकन से ही होता है। ध्यान का साधक भी अपने प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में आगे बढ़ता है, किंतु कभी-कभी वह पीछे भी खिसक जाता है। विकास की शृंखला जुड़ती-जुड़ती टूट जाती है और ह्रास का सिलसिला शुरू हो जाता है। साधना के मार्ग में बहुत उतार-चढ़ाव आते हैं। उन्हें तटस्थ भाव से पार करने के लिए हर गतिविधि के समुचित मूल्यांकन की अपेक्षा है। अन्यथा अकस्मात उत्पन्न होने वाली स्थिति में साधक का चित्त डांवांडोल हो सकता है। अस्थिरता की स्थिति में वह साधक अपनी समस्या का समाधान पा लेता है, जिसे गुरु का सान्निध्य प्राप्त होता है। अपने आप साधना करने वाला उलझ जाता है। यह उलझन अकारण नहीं होती। ध्यान के अभ्यास द्वारा जब सुप्त शक्तियों का जागरण होता है तो काम-केंद्र भी जाग्रत हो जाता है। उससे कई प्रकार की कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं। जब कर्म-संस्कार या कर्म-विपाक की उदीरणा की जाती है तब एक प्रकार से धक्का-सा लगता है। वह धक्का इतना अप्रत्याशित होता है कि कोई सहारा देने वाला न हो तो साधक लड़खड़ा जाता है या गिर जाता है। इसलिए प्राचीन आचार्यों ने गुरु की सन्निधि में साधना करने का विधान किया है। उत्तराध्ययन सूत्र में साधक को विशेष मार्गदर्शन देते हुए लिखा गया–

आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी।।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(१६)

बहुत चले हैं बिना शिकायत हम मंजिल के आश्वासन पर
लेकिन हर मंजिल को पीछे छोड़ रहे हैं चरण तुम्हारे
तपे बहुत तपती लूओं से रहें नीड़ में मन करता है
पर पौ फटते ही प्राची में खींच रहे तुम प्राण हमारे।।

देख रहे दिन में भी सपने बुनते जाते अभिनव चाहें
सदा दिखाते ही रहते हो हमें देव! अनजानी राहें
खोली हाट शांति की जब से ग्राहक बढ़ते ही जाते हैं
समझ लिया सबने इस जग के झूठे सब रिश्ते-नाते हैं
जुटे हुए हम बिना शिकायत हर सपना साकार बनाने
फिर भी तोष नहीं धरती से तोड़ रहे अम्बर के तारे।।

बचपन से ले अब तक कितने ग्रंथों को हमने अवगाहा
अपनी नाजुक अंगुलियों से जब-तब कुछ लिखना भी चाहा
समय-समय पर बाँधा मन के भावों को वाणी में हमने
नहीं कहा विश्राम करो कुछ एक बार भी अब तक तुमने
बहुत पढ़े हम बिना शिकायत मन ही मन घबराते तुमसे
कब होंगे उत्तीर्ण तुम्हारी नजरों में पढ़-लिखकर हारे।।

नव्य दिव्य भावों को बाँधा मधुर नाद में हे संगायक!
मन की प्रत्यंचा पर सचमुच चढ़ा दिया संयम का सायक
हर मानव की पीड़ा हर कर तुमने उसको सुधा पिलाई
मुरझाते जीवन-उपवन की मासूसी भी दूर भगाई
बहुत जगे हम बिना शिकायत छोटी-बड़ी सभी रातों में
बिना जगे कुछ सो लेने दो अब तो धरती के उजियारे।।

कदम-कदम पर चौराहे हैं लक्ष्य हुआ ओझल आँखों से
देख विपुल विस्तार गगन का शक्ति लुप्त-सी है पाँखों से
जूझ रही है हर खतरे से विवश जिंदगी यह मानव की
कुछ अजीब-सी अकुलाहट भी हुई देख छाया दानव की
डटे हुए हम बिना शिकायत जीवन के हर समरांगण में
किंतु कहोगे कब तुम हमको खड़ी पास में विजय तुम्हारे।।

(२०)

प्रेरणा की साँस भरते ही रहो तुम
कदम मंजिल से नहीं अब रूठ पाए
सींचते रहना नई हर पौध को तुम
किसी मौसम में नहीं वह सूख पाए।।

तोड़ सपनों को मुझे दो सत्य का सुख
अनकही मन की तुम्हें है ज्ञात सारी
स्वाति बनकर बूँद को मोती बना दो
जानते हम आर्यवर! क्षमता तुम्हारी
चाँद-सूरज से अधिक आलोक लेकर
तुम धरा पर बन फरिश्ते उतर आए।।

लग रहा मेला धरा पर आज यह क्यों
मुस्कुराते क्यों गगन में नखत-तारे
मूर्ति मनहारी गढ़ी किसने यहाँ पर
ज्योति-किरणों ने बिछाई क्यों बहारें
मुग्ध होते प्राण इस अनुपम छटा पर
मौन मन की धड़कनें भी गुनगुनाए।।

रत्न संयम का मिला कालूगणी से
तुम हुए निश्चिंत गुरु की शरण पाकर।
बन गए उनकी कृपा से तुम समय पर
गण-गगन में चमकते निरुपम सुधाकर।
पुण्य चरणों का उपासक जगत सारा
दीप ये विश्वास के तुमने जलाए।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(२) वीतरागेण यद् दृष्टं, उपदिष्टं समर्थितम्।
आज्ञा सा प्रोच्यते बुद्धैः, भव्यानामात्मसिद्धये।।

वीतराग ने जो देखा, जिसका उपदेश किया और जिसका समर्थन किया, वह आज्ञा है—ऐसा तत्त्वज्ञ पुरुषों ने कहा है। आज्ञा भव्य जीवों की आत्मसिद्धि का हेतु है।

आचार्य गुणभद्र ने आत्मानुशासन में भव्य की परिभाषा देते हुए लिखा है—जो यह सोचता है कि मेरे लिए क्या कुशल है, जो दुःख से बहुत घबराता है, जो सुख का गवेषक है, जो बुद्धि के गुणों से संपन्न है, जो श्रवण और चिंतन करता है, जो अनाग्रही होता है, जो धर्म-प्रिय होता है और जो शासन के योग्य होता है, वह भव्य है। जो भव्य होता है वही आत्म-साक्षात्कार कर सकता है।

(३) तदेव सत्यं निःशंङ्क यज्जिनेन प्रवेदितम्।
रागद्वेषविजेतृत्वाद्, नान्यथा वादिनो जिनाः।।

जो जिन-वीतराग ने कहा, वही सत्य और असंदिग्ध है। वीतराग ने राग और द्वेष को जीत लिया इसलिए वे मिथ्यावादी नहीं होते, अयथार्थ निरूपण नहीं करते।

इस श्लोक में सत्य की सुंदरतम परिभाषा दी गई है। सत्य क्या है—इसका स्वरूप-निर्णय पदार्थ के स्वरूप से नहीं हो सकता। वह वक्ता की निष्कषाय वृत्ति से होता है। 'सत्य वही है जो वीतराग द्वारा कथित है'—यह परिभाषा सार्वजनिक है। इस परिभाषा को समझने के लिए वीतराग के स्वरूप को जानना आवश्यक होता है। वीतराग वह है जिसके चारों कषाय और मोह का आवरण नष्ट हो चुका है।

अयथार्थ भाषण के हेतु हैं—राग-द्वेष और मोह। जिनका लक्ष्य आत्महित है, जो निःस्वार्थ हैं, वीतराग हैं और कृतकृत्य हैं, वे कभी अयथार्थ भाषण नहीं करते। परंपरा और मान्यता के मोह से मूढ़ व्यक्ति अयथार्थ भाषण भी करते हैं। उनमें अपनी प्रतिष्ठा और कीर्ति का मोह होता है। उन बाह्य उपाधियों से मूढ़ व्यक्ति अयथार्थ भाषणों और आचरणों में संलग्न हो जाते हैं। लेकिन जो यह मानते हैं कि मेरा उत्थान इनसे नहीं, स्व-आत्मा से है, वे प्राणों का बलिदान करके भी सत्य की रक्षा करते हैं।

(४) आज्ञायामरतिर्योगिन्! अनाज्ञायां रतिस्तथा।
मा भूयात्ते क्वचिद् यस्माद्, आज्ञाहीनो विषीदति।।

हे योगिन्! आज्ञा में तेरी अरति-अप्रसन्नता और अनाज्ञा में रति-प्रसन्नता कहीं भी न हो, क्योंकि आज्ञाहीन साधक अंत में विषाद को प्राप्त होता है।

(५) अपरा तीर्थकृत् सेवा, तदाज्ञापालनं परम्।
आज्ञाराद्धा विराद्धा च, शिवाय च भवाय य।।

तीर्थंकर की पर्युपासना की अपेक्षा उनकी आज्ञा का पालन करना विशिष्ट है। आज्ञा की आराधना करने वाले मुक्ति को प्राप्त होते हैं और उससे विपरीत चलने वाले संसार में भटकते हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-२४ : सम्यक्त्व के कितने लक्षण हैं?

उत्तर : सम्यक्त्वी कौन है, कौन नहीं है, इसका निर्धारण निश्चय में अतीन्द्रिय ज्ञानी ही कर सकते हैं। व्यवहार की अपेक्षा से उसके पाँच लक्षण हैं—

(१) शम	–	कषाय की शांति
(२) संवेग	–	मोक्षाभिलाषा
(३) निर्वेद	–	वैराग्य
(४) अनुकंपा	–	करुणा
(५) आस्तिक्य	–	आत्मा, कर्म आदि में आस्था

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य कालक (द्वितीय)

भड़ौंच में उस समय उनके भानजे बलमित्र का राज्य था। उसका छोटा भाई भानुमित्र युवराज था। आचार्य ने दोनों को राजा की नीचता बताकर उज्जयिनी पर चढ़ाई करने को तैयार कर लिया। परंतु कुछ राजनीतिविदों ने गर्दभिल्ल का नाश करने के लिए इस सेना को अपर्याप्त बताकर और सेना जुटाने का सुझाव दिया। फलस्वरूप आचार्य पारिस कुल के शक शासकों को अपने में मिलाने के लिए उद्यत हो गए। आचार्य ने सिंधु नदी के पार जाकर शक शासकों को निमित्त और ज्योतिष से प्रभावित करके भक्त बना लिया। उन्हें साथ लेकर और भड़ौंच से अपने भानजों को बुलाकर प्रबल दल-बल के साथ उज्जयिनी पर आक्रमण का दिया। राजा गर्दभिल्ल अपनी गर्दभी विद्या के अहंकार में डूबा हुआ था। गर्दभी विद्या की अधिष्ठात्री देवी गर्दभी के समान मुख की थी। परंतु आचार्य इस विद्या के गुप्त रहस्यों को जानते थे तथा यह भी जानते थे कि इसके प्रभाव को कैसे नष्ट किया जा सकता है। आक्रमण की सूचना पाकर राजा गर्दभी को किसी उच्च स्थान पर शत्रु सेना की ओर मुख करके स्थापित करता और स्वयं तेला करके उसकी आराधना करता। तपःसाधना पूरी होते ही गर्दभी का मुख खुल जाता और वह उच्च स्वर में रेंगने लगती। शत्रु सेना का सैनिक, अश्व, हाथी आदि जो भी वह शब्द सुनता वह तत्काल ही मुँह से रक्त उगलता हुआ पृथ्वी पर गिर जाता, मूर्च्छित हो जाता। आचार्य यह सब जानते थे। अतः १०८ अति कुशल शब्दवेधी धनुर्धरों को सज्जित करके बैठा दिया। ज्यों ही गर्दभी ने रेंकने को मुँह खोला त्यों ही सबने एक साथ बाण छोड़कर उसका मुँह बाणों से भर दिया। इस प्रकार गर्दभी विद्या का प्रभाव पूर्णतः नष्ट हो गया।

भीषण युद्ध में परास्त बने गर्दभिल्ल को बंदी बनाकर सरस्वती को मुक्त करा लिया गया। आचार्य ने शकराज को उज्जयिनी के सिंहासन पर बिठा दिया और गर्दभिल्ल को राज्यच्युत करके सुख की साँस ली।

इसके चार वर्ष बाद ही विक्रमादित्य ने उज्जयिनी पर अपना शासन स्थापित कर लिया। राज्यारोहण के समय विक्रमादित्य ने वीर निर्वाण संवत् ४७० से विक्रमी संवत् चलाया।

आचार्य कालक ने संघ एवं सती सरस्वती के सतीत्व की रक्षार्थ महा आरम्भजन्य पाप किया था उसकी शुद्धि के लिए प्रायश्चित्त किया तथा बहन को भी पुनः दीक्षित किया।

इन्हीं कालकाचार्य को चतुर्थी की संवत्सरी की स्थापना करने वाला माना गया है। कारण बताया गया है कि भड़ौंच नगर से इनके भानजों (बलमित्र, भानुमित्र) ने एक बार चतुर्मास में विहार करने के लिए इन्हें विवश कर दिया। आचार्य कालक ने प्रतिष्ठानपुर नगर में जाकर शेष पावन बिताया। वहाँ के राजा सातवाहन ने पंचमी को इंद्र महोत्सव होने से षष्ठी को संवत्सरी पर्व की आराधना करने की प्रार्थना की। पर आचार्य ने उसे असंभव बताकर चतुर्थी को पर्वाराधन किया। कई विद्वान् गर्दभिल्ल पर चढ़ाई करने में बाधा आने के कारण चतुर्थी को संवत्सरी की, ऐसा भी मानते हैं।

परंतु यह सुनिश्चित है चतुर्थी को संवत्सरी का प्रवर्तन आर्य कालक द्वितीय ने किया। यह समय था वीर निर्वाण संवत् ४७१ ।

आचार्य खपुट

आचार्य खपुट अपने युग के एक प्रभावी आचार्य थे। निशीथचूर्णि में आठ प्रकार के व्यक्तियों को धर्मप्रभावक माना है। वहाँ विद्याबल से संघ प्रभावकों में आर्य खपुट का नाम प्रस्तुत किया है। विविध विद्यासंपन्नता के कारण उन्हें आचार्य सम्राट् भी कहा गया है।

(क्रमशः)

विकास महोत्सव के विविध आयोजन

भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि पुरुष थे आचार्यश्री तुलसी

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ भवन में २८वाँ विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि पुरुष थे। जैन शासन में एक क्रांतिकारी एवं प्रभावशाली आचार्य थे। तेरापंथ धर्मसंघ में नए-नए उन्मेष कारक एवं विकास की नई रेखाएँ खींचने वाले आचार्य थे।

शासनश्री साध्वी सुव्रतां जी, शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी, साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने अपने नेतृत्व एवं व्यक्तित्व के संदर्भ में अनेक आकर्षक एवं प्रेरक घटनाओं को प्रस्तुत किया।

तेरापंथी सभा, रोहिणी के अध्यक्ष मदनलाल जैन दिल्ली तेरापंथी सभा के मंत्री सुरेंद्र नाहटा, प्रवीण सिंघी, राज सिंघी, पुष्पा बैंगानी ने तुलसी चरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित किए। साध्वी चिंतनप्रभा जी, साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने गीत का संगान किया। आभार प्रदर्शन प्रवीण सिंघी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन तेयुप के संयोजक शुभम जैन ने किया।

क्रांतिकारी आचार्य थे आचार्य तुलसी

जीन्द।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तुलसी अष्टकम से संयम जैन ने मंगलाचरण किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि विश्व क्षितिज पर अनेक महापुरुष अवतरित होते हैं। उनके अनुपम अवदानों से सारा समाज उपकृत होता है। उन महापुरुषों में एक नाम है—आचार्य तुलसी। वे तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता थे। आचार्य तुलसी विकास के प्रतीक, विकास के शिखर पुरुष थे। उन्होंने विकास के अनेक नए-नए आयाम स्थापित किए। वे मानवता के मसीहा थे। उन्होंने नैतिक क्रांति व मानसिक शांति के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। पाँव-पाँव चलकर नैतिकता के दीप जलाए।

प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, जैन एकता मंच, जैन विश्व भारती, समण श्रेणी, उपासक श्रेणी आदि अनेक अवदानों से तेरापंथ धर्मसंघ को अलंकृत किया। साध्वी कंचनरेखा जी ने अपने विचारों के माध्यम से उन्हें क्रांतिकारी आचार्य की उपमा दी। साध्वी सुमंगलाश्रीजी, साध्वी सुलभयशा जी ने अपने भजन से आचार्य तुलसी की महिमा का गुणगान किया। इस अवसर पर कुणाल मित्तल, डॉ० अनिल जैन, नरेश जैन, विमल जैन आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंच का संचालन तेयुप संरक्षक राजेश जैन ने किया।

विकास महोत्सव का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के मंत्रोच्चार के साथ हुआ। सर्वप्रथम साध्वी आस्थाश्री जी, साध्वी धैर्यप्रभा जी और साध्वी विज्ञप्रभा जी ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राकेश दुधोड़िया, महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेम भंसाली और समण संस्कृति संकाय का प्रतिनिधित्व करती हुई बरखा पुगलिया ने विकास महोत्सव पर प्रकाश डालते हुए आचार्य तुलसी के प्रति अपनी भावांजलि व्यक्त की।

इस अवसर पर पिस्ताबाई श्रीश्रीमाल ने गीत प्रस्तुत किया। प्रेम चावत ने अपनी भावना प्रस्तुत की। साध्वी धैर्यप्रभा जी, साध्वी आस्थाश्री जी और साध्वी विज्ञप्रभा जी एवं साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वीश्री जी ने विहार, सार-संभाल, वक्तृत्व कला, अध्ययन-अध्यापन, स्वाध्याय, चित्त समाधि, व्यवहार का प्रशिक्षण, अहिंसा, अनेकांत अणुव्रत और जीवन-विज्ञान—इन आठ बिंदुओं पर तेरापंथ की विकास यात्रा को संक्षिप्त में बताने का प्रयास किया। सभी श्रावक-श्राविकाओं को भी इस विकास यात्रा में जुड़ने के लिए आह्वान किया। कार्यक्रम का समापन संघगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी आस्थाश्री जी ने किया।

विकास महोत्सव व तप अभिनंदन

पेटलावद।

विकास महोत्सव के अवसर पर मुनि वर्धमान कुमार जी ने तेरापंथ भवन में कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने अपने पुरुषार्थ से पूरी सदी को उजाला दिया। आप एक ऐसे संत थे जिन्होंने अपने चरणों से धरती व चिंतन से आकाश को मापने का प्रयास किया। लाखों लोगों को जीने का गुर सिखाया।

आठवें आचार्यश्री कालूगणी ने धर्मसंघ में विद्या के बीजों का रोपण किया। संस्कृत प्राकृत की पढ़ाई के द्वार खोले। आचार्यश्री तुलसी का शासनकाल विकास का स्वर्णिम काल रहा। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के कुशल नेतृत्व में धर्मसंघ विकास के पथ पर निरंतर गतिमान है।

मुनि वर्धमानकुमार जी की प्रेरणा से नेहा सौरभ पटवा के मासखमण तप संपन्नता व श्रेया प्रदीप पटवा के ६ उपवास की संपन्नता पर तेरापंथी सभा की ओर से साहित्य भेंट कर उन्हें सम्मानित किया गया। पटवा परिवार की महिलाओं ने गीतिकाओं द्वारा तपस्या की अभिवंदना की।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विनोद भंडारी ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। तप अभिनंदन कार्यक्रम का संचालन राजेश वोरा ने किया।

विकास महोत्सव, तप सम्मान एवं मेधावी विद्यार्थी सम्मान

फारबिसगंज।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के सहवर्ती साध्वीवृंद के सान्निध्य में विकास महोत्सव का कार्यक्रम संपन्न हुआ। विकास महोत्सव में नेपाल, बिहार, झारखंड से गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के नवकार मंत्र जाप व भक्तामर के पाठ से हुई। फारबिसगंज सभा के अध्यक्ष निर्मल मरोठी ने स्वागत वक्तव्य दिया। तेयुप अध्यक्ष आलोक सेठिया व महिला मंडल की अध्यक्षा कुसुम भंसाली ने स्वागत किया। महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। साध्वी सुधाकुमारी जी ने गुरु तुलसी का गुणगान गीत के द्वारा किया तथा साध्वी भावनाश्री जी ने आचार्य तुलसी की विवेक चेतना पर प्रकाश डाला। साध्वी पीयूषप्रभा जी ने विकास महोत्सव पर अपना उद्बोधन दिया।

फराबिसगंज कन्या मंडल व ज्ञानशाला के द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गई। विकास महोत्सव के कार्यक्रम का संयोजन साध्वी दीप्तियशा जी ने किया। विकास महोत्सव की बहुआयामी कार्यक्रम का दूसरा चरण नेपाल, बिहार, झारखंड स्तरीय क्षमायाचना का रहा, जिसमें २६ क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने साध्वीश्री जी से क्षमायाचना की। शाखा मंडल अररिया आरएस, अररिया कोर्ट, भीम नगर, किशनगंज, नरपतगंज, गुलाब बाग, निर्मली, कटिहार, राघवपुर, विराटनगर, राजबिहार, परतापगंज, वीरगंज, धुलाबाड़ी, फुलका मदनपुर, कलियागंज, जोकी, खुश्कीबाग मधुबन, धमदाहा, घुरना, वीरपुर बहादुरगंज, दलखोला, हरनगरा, हनुमाननगर के अलावा अन्य क्षेत्रों से श्रद्धालुजन उपस्थित थे। नेपाल, बिहार, झारखंड तेरापंथी सभा की अध्यक्षता में सभी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी ने खमतखामणा किया। खमतखामणा की शब्दावली का उच्चारण नेपाल, बिहार, झारखंड स्तरीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष करण दफ्तरी द्वारा किया गया। महासभा के पूर्व अध्यक्ष हंसराज बेताला, नेपाल बिहार सभा के महामंत्री चैन रूप दुगड़, महासभा के बिहार प्रभारी नेमचंद बैद ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का तीसरा चरण मेधावी छात्र सम्मान के रूप में मनाया गया। तेरापंथ समाज में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। एमबीबीएस, एमबीए, सीए, पीएच-डी०, इंजीनियरिंग, फैशन डिजाइनर आदि-आदि डिग्री के धारक बच्चों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी ने कहा कि बच्चों में ऊँची शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक संस्कार भी जरूरी है तभी हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को जीवित रख पाएँगे।

कार्यक्रम का अगला चरण रहा तप अभिनंदन का। नेपाल, बिहार, झारखंड में एकमात्र चातुर्मास साध्वी पीयूषप्रभा जी का फारबिसगंज को मिला है। सावन और भादों में पूरे चोखले से १६, १७, १५, ११, ६, ८ आदि तपस्याओं का सम्मान हुआ। नेपाल बिहार झारखंड से लगभग ६० से अधिक व्यक्तियों ने तप कर कर्म निर्जरा की। इस अवसर पर नेपाल बिहार झारखंड स्तरीय तेरापंथी सभा ने विभिन्न स्थान से पधारे तपस्वी गण को मोमेंटो प्रदान किया। इन चरणों का संयोजन नीलम बोथरा ने किया।

कार्यक्रम का अंतिम चरण रहा सेवा का सम्मान। सेवा के कार्यक्रम का संयोजन कमल छोरिया ने किया। अंत में फारबिसगंज सभा के मंत्री सुमन डागा ने बाहर से समागत सभी अतिथिगण तथा स्थानीय सतर पर व्यवस्थापकों के प्रति सहयोग के लिए आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का समापन संघगान के द्वारा हुआ।

मंगलभावना समारोह

कांकरोली।

मुनि संजय कुमार जी, मुनि प्रकाश कुमार जी एवं मुनि सिद्धप्रज्ञ जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी मुकेश भटेवरा निवासी छापली-दिवेर का मंगलभावना समारोह मनाया गया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि जिस उत्साह और उमंग से मुकेश अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा है यह अपने आपमें एक गौरव की बात है। मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि मुकेश को मैं काफी सालों से जानता हूँ, इन्होंने बड़े उत्साह से हमारी बात को स्वीकार किया और संयम के पथ को अपनाया। मुनि प्रकाश कुमार जी ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुए कहा कि मुमुक्षु मुकेश के विकास में हमें योगभूत बनने का मौका मिला। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोनी ने मुमुक्षु मुकेश का स्वागत करते हुए अभिनंदन पत्र का वाचन किया। तेरापंथ समाज के गणमान्य लोगों ने मुमुक्षु मुकेश का साहित्य और शॉल उड़ाकर अभिनंदन पत्र भेंट किया। इस अवसर पर समाज की ओर से मुमुक्षु मुकेश के पिताश्री लालचंद एवं माता ताराबाई का सम्मान किया गया।

तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिता में भाग लेने वाले भाई-बहनों का साहित्य आदि के माध्यम से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि प्रकाश कुमार जी एवं वैभव मेहता ने किया। कार्यक्रम के दौरान तेयुप द्वारा वीडियो गीत का लोकार्पण किया गया। इस गीत की रचना मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने की जिसे स्वर दिया बेंगलुरु के मधुर गायक तूफान मांडोत ने। दीक्षार्थी मुमुक्षु मुकेश ने गुरुदेव एवं मुनि संजय कुमार जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मंगलकामना की। तेरापंथ सभा के मंत्री हिम्मत लाल कोठारी ने मंगलभावना व्यक्त की।

अणुव्रत गोट टेलेंट क्विज का आयोजन

मुंबई।

अणुव्रत समिति, मुबई द्वारा आयोजित अणुव्रत गो टेलेंट के अणुव्रत दर्शन क्विज तेरापंथ भवन, सांताक्रुज में आयोजित हुई। अणुव्रत गीत द्वारा मंगलाचरण किया गया। अणुव्रत समिति के नशामुक्ति प्रभारी एवं तेयुप अध्यक्ष किरन परमार ने सभी का स्वागत व अभिनंदन किया। स्वाती सोनी ने क्विज की पूरी जानकारी देते हुए प्रतियोगिता की जिज्ञासाओं का समाधान दिया व क्विज संचालन किया।

प्रथम स्थान-ग्रुप अनीता कुमठ, नम्रता कुमठ, वृत्तिका कुमठ, हर्षल कुमठ; द्वितीय स्थान-ग्रुप हर्ष कोठारी, दृष्टि मादरेचा, परवर परमार, रोहित चपलोत; तृतीय स्थान-ग्रुप दक्ष बम, चेतन बाफना, शुभम गोखरू, जैनम बाफना रहे। अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल एवं सांताक्रुज अणुव्रत क्षेत्र संयोजक बसंत कुमठ, सह-संयोजक दिलीप धींग, कोषाध्यक्ष ओम चोरड़िया एवं मोना नवलखा की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में विधित धाकड़ का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन एवं निर्णय स्वाती सोनी एवं मधु सियॉल ने किया। महिला मंडल संयोजिका ममता कोठारी, सह-संयोजिका डिंपल परमार ने जज का सम्मान किया। आभार ज्ञापन संयोजक बसंत कुमठ ने किया।

भिक्षु चरमोत्सव के विविध आयोजन

मर्यादा पुरुष थे आचार्य भिक्षु

गदग।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में २१९वाँ आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव दिवस मनाया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु उस व्यक्तित्व का नाम है जिन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ के लिए मर्यादाएँ लिखी, संविधान बनाया, जिन्होंने कष्टों को उपहार के रूप में स्वीकार किया। आचार्य भिक्षु ने अपने मौलिक चिंतन के आधार पर नए मूल्यों की स्थापना की।

डॉ० साध्वी गवेषणा ने संचालन करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु ने आकर क्या खोया-क्या पाया इसका लेखा-जोखा इतिहास ने उनका जीवनवृत्त स्वयं बोल रहा है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि जैन परंपरा में आचार्य भिक्षु का उदय एक नए आलोक सृष्टि है। उनका जीवन अनेक विशिष्टताओं का पुंज था। कार्यक्रम की शुरुआत सीमा कोठारी के मंगलाचरण से हुई।

साध्वी मेरूप्रभा जी व साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। परतूल से समागत अंजु नाहर ने अपना चमत्कारी संस्मरण सुनाया। जितेंद्र संकलेचा, जितेंद्र जीरावला, विनय सालेचा, दीपचंद भंसाली, ललित गांधी मूथा ने गीतिका प्रस्तुत की। पुष्पा बाई भंसाली ने भिक्षु चालीसा का संगान किया। सभा अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी ने भी अपने विचार रखे।

शाम को विराट धम्म जागरण का आयोजन किया गया। मंगलाचरण कन्या मंडल के द्वारा हुआ। शोभा सारिका संकलेचा, पिस्ता गांधी मूथा, तेयुप, किशोर मंडल के सभी सदस्यों ने स्वर लहरियों से सबको भाव-विभोर किया। ज्ञानशाला के बच्चों का वन मिनट शो रखा गया, जिसमें एक मिनट में सबसे ज्यादा 'ॐ भिक्षु' बोलने वालों को पुरस्कृत किया गया। संचालन दीपक भंसाली ने किया।

आचार्य भिक्षु एक महान साहित्यकार थे

राजलदेसर।

आचार्य भिक्षु के २१९वें चरमोत्सव पर डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने कहा कि महान आचार्य भिक्षु आलोक पुंज, तेजपुंज पुरुष थे। आचार्य भिक्षु एक महान साहित्यकार, एक महान भविष्यकार थे। आचार्य भिक्षु के जीवन का हर पहलू अध्यात्म से सराबोर था। इसी अध्यात्म बल के सहारे, विरोधी परिस्थितियों में भी वे अटल रहे।

इस अवसर पर साध्वी धर्मयशा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व महा-उद्योतकारी, महाधैर्यशाली था। वे अनाग्रही चेतना के धनी थे, अनुशासन के सजग प्रहरी थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी कुमुदप्रभा जी ने अपने स्वरचित गीत के साथ किया। समारोह में महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, करण गीड़िया, लीना कुंडलिया, समता गंग ने गीतिका, कविता, शब्द चित्र के माध्यम से आचार्य भिक्षु को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने अपनी स्वरचित कविता के माध्यम से अध्यात्म नेता के प्रति अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में साध्वी परिवार ने सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी विनम्रयशा जी ने किया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में धम्म जागरण का आयोजन किया गया, जिसमें साध्वीवृंद ने गीतिका प्रस्तुत की। तत्पश्चात महिला मंडल, कन्या मंडल, भिक्षु भजन मंडली, अंजलि, ऋषिका बरड़िया, मीनाक्षी बुच्चा, हेमलता घोषल, सविता घोषल, रीना बैद, आरती बैद, रिचा, यशस्वी बच्छावत, करण गीड़िया, कलिका चोपड़ा चैनरूप सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भजन गाकर महामना भिक्षु के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

भिक्षु चरमोत्सव दिवस

कांकरोली।

भिक्षु स्वामी के निर्वाण दिवस सुदी तेरस चरमोत्सव के अवसर पर तेयुप द्वारा भिक्षु भजन मंडली के तत्त्वावधान में भिक्षु भजन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थितजनों ने भिक्षु स्वामी को स्मरण कर भजनों का रसास्वादन किया।

महामना आचार्यश्री भिक्षु, महान ऋषि व जितेंद्रिय पुरुष थे

पेटलावद।

आचार्य भिक्षु उपशांत कषाय वाले, सकारात्मक चिंतन, विनम्र व्यवहार, सतयान्वेषण मनोवृत्ति आत्मनिष्ठा संपन्न मनोबली व्यक्तित्व के धनी संत थे। वे तेज पुंज थे, आलोक पुंज थे। उक्त उद्‌गार मुनि वर्धमान कुमार जी ने भिक्षु चरमोत्सव पर तेरापंथ भवन में व्यक्त किए। आपने कहा कि वे महान योगी, महान ध्यानी, महान तार्किक, महान दार्शनिक, महान चिंतक, महान साहित्यकार, महान प्रवचनकार थे।

आचार्य भिक्षु ने धर्म की स्पष्ट परिभाषा प्रदान करते हुए कहा था कि असंयमी के जीने की वांछा करना राग, मरने की वांछा द्वेष और संसार समुद्र से तरने की वांछा करना वीतराग देव का धर्म है। इस अवसर पर कन्या मंडल ने गीतिका प्रस्तुत की। संघगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। भिक्षु चरमोत्सव पर अपने आराध्य महामना आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी भावांजलि के रूप में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने मुनिश्री से उपवास, एकासन के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

भिक्षु चरमोत्सव दिवस

विजयनगर।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में भिक्षु का २१९वाँ चरमोत्सव दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सामुहिक नमस्कार महामंत्र से की गई। तत्पश्चात महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने आचार्य भिक्षु के गुणों का स्मरण किया तथा महिला मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने अपना उद्‌बोधन दिया। साध्वीश्री जी ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावांजलि अर्पित की। नैना पटावरी ने गीत का संगान किया।

साध्वी आस्थाश्री जी ने कहा कि सफलता उसी को मिलती है जो पुरुषार्थ करते हैं। आचार्यश्री के अवदानों को विस्तार से बताया। इस अवसर पर सभा उपाध्यक्ष सुभाष पोखरणा, सहमंत्री प्रकाश गांधी एवं पदाधिकारी उपस्थित थे। संचालन साध्वी विज्ञप्रभा जी ने किया।

आचार्य भिक्षु चरमोत्सव

चंडीगढ़।

धर्म आपसी सद्‌भावना एवं एकता का प्रतीक है, क्योंकि किसी धर्म विशेष को मानने वाले लोग एक ही प्रकार की जीवन पद्धति का पालन करते हैं। धर्म या मजहब अपने अनुयायियों को एकता के सूत्र में पिरोकर रखने का कार्य भी करता है। ये शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने धर्म सद्‌भावना सम्मेलन और २१९वें आचार्य भिक्षु चरम कल्याण दिवस पर अणुव्रत भवन में व्यक्त किए।

कार्यक्रम में मुनि अभय कुमार जी, पूज्यवाद त्रिदंडी स्वामी भक्ति विचार विष्णु महाराज, अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय चैतन्य गौडिया मठ, स० न्याब सिंह चेयरमैन चंडीगढ़ समुह गुरुद्वारा प्रबंधक, कन्हैया दास ब्रह्मचारी, नरेंद्र ब्रह्मचारी, जसबीर सिंह वेरका सेक्टर-८ के मुख ग्रंथी आदि श्रावक-श्राविकाएँ सम्मिलित थे। शांता चोपड़ा, चंद्रकला सेठिया व सरिता बोथरा बहनों और प्रज्ञा जैन के गीत से कार्यक्रम आरंभ हुआ। कार्यक्रम का संचालन सलील जैन ने किया।

पर्युषण पर्व नहीं महापर्व है

रायपुर।

तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का आयोजन हुआ। खाद्य संयम दिवस : पर्युषण पर्व कार्यक्रम में मुनिश्री दीप कुमार कहा—पर्युषण पर्व नहीं, महापर्व है। यह भाद्रव महीने में सामान्य त्योहारों की तरह आता है इसलिए पर्व है किंतु यह पूर्ण आत्मशुद्धि का प्रेरक है इसलिए यह महापर्व है। जैनों का एकमात्र विशिष्टतम पर्व है। पर्युषण की पृष्ठभूमि में मानवता, संयम और अनुशासन की प्रतिष्ठा का प्रसंग छिपा है।

मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि भोजन केवल पेट भरने के लिए नहीं मन की प्रसन्नता के लिए, स्वस्थ रहने के लिए, संयम साधना के लिए ही करना चाहिए। जयाचार्य पर गीत का संगान भी किया।

स्वाध्याय दिवस : पर्युषण महापर्व का दूसरा दिन स्वाध्याय दिवस के रूप में आयोजित हुआ। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि साधना में प्रगति का सरल मार्ग है—स्वाध्याय। स्वयं का अध्ययन का स्वाध्याय है। तप के बारह प्रकारों में स्वाध्याय को एक तप के रूप में मान्य किया गया है। मुनिश्री काव्यकुमार जी ने कहा कि स्वाध्याय वह दर्पण है, जिससे अपने रूप को देखकर उसे सँवारने की व्यवस्था की जा सकती है।

सामायिक दिवस : पर्युषण महापर्व का तीसरा दिन सामायिक दिवस का आयोजन किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आज का मानव निकट से दूर और दूर से निकट हो रहा है। वह ग्रह नक्षत्रों से संपर्क स्थापित कर रहा है, समुद्र की गहराई का अवगाहन कर रहा है पर दूसरी ओर अपने अस्तित्व से दूर हो रहा है। सामायिक का तात्पर्य है अपने में रमण करना, अपने साथ जीना। आत्मरमण का व्रत है—सामायिक। सामायिक से बाहर और भीतर का संतुलन स्थापित होता है। बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि सामाजिक तनाव मुक्ति का सफल उपाय है—सामायिक। बाल मुनिश्री ने गीत का भी संगान किया।

वाणी संयम दिवस : मुनि दीप कमार जी ने कहा कि वाणी को बाण नहीं, वीणा बनाएँ। जब भी बोलें मधुर भाषा में बोलें। कटु-कर्कश भाषा नहीं बोलें। मधुरभाषी सबका चहेता बनता है, सबमें लोकप्रिय होता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि कम बोलें, बोलें तो मीठा बोलें, सत्य बोलें और जो बोलें तोलकर बोलें। मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि वाणी से व्यक्ति के चरित्र की पहचान होती है। कौन व्यक्ति कैसा है, इसकी पहचान उसका भाषा व्यवहार है।

अणुव्रत दिवस : मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि जन-जन में संयम प्रधान जीवनशैली का विकास होना चाहिए। अणुव्रत का उद्‌घोष ही है—'संयमः खलु जीवनम'। संयम ही जीवन है।

बाल मुनि काव्य कुमार जी ने गीत का संगान करते हुए कहा—व्रत आत्मविश्वास बढ़ता है। व्रत से संकल्प शक्ति बढ़ती है।

जप दिवस : मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि जप आध्यात्मिक आरोहण का एक प्रशस्त उपक्रम है। मंत्र मंत्र अचिन्त्य प्रभाव उत्पन्न करने वाली शक्तियों में से एक है। मुनिश्री ने आगे कहा कि मंत्र जाप में उच्चारण का बहुत महत्त्व है। नमस्कार महामंत्र सबसे बड़ा मंत्र है। बाल मनि काव्य कुमार जी ने कहा कि चंचल मन को स्थिर एवं केंद्रित करने में जप सर्वोत्तम उपाय हैं

ध्यान दिवस : मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि जीवन के किसी महत्त्वपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति ध्यान से ही संभव है। जो ध्यान का प्रशिक्षण नहीं लेगा, ध्यान का अभ्यास नहीं करेगा वह अधूरा रहेगा। अक्षम रहेगा। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि शांति एवं आनंद का अनुभव करने के लिए प्रेक्षाध्यान की साधना करें।

संवत्सरी महापर्व : संवत्सरी महापर्व पर मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि संवत्सरी आत्ममंथन का पर्व है। यह पर्व हमें यह संदेश देता है कि हम आत्मा के पास रहें। भीतर जो क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी जो कषाय उन्हें दूर करके ही हम इस पर्व को सच्चे अर्थों में मना सकते हैं।

क्षमापना दिवस : क्षमापना दिवस का आयोजन किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि क्षमापना दिवस हमें यह संदेश दे रहा है कि हम दूसरों की भूलों को भूलें और क्षमा करें। क्षमापना का अर्थ है अपनी और पर की शांति के लिए क्षमा लेना और देना। मुनिश्री ने रायपुर के श्रावक समाज से खमतखामणा किए। मुनिश्री के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व पर सैकड़ों तपस्याएँ और पौषध हुए।

क्षमापना कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेंद्र चोरड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा सरिता सेठिया, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा, टीपीएफ की तरफ से नवीन दुगड़, अणुव्रत समिति की ओर से सुरेंद्र ओस्तवाल ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। संचालन तेरापंथी सभा मंत्री सूर्यप्रकाश बैद ने किया।

✦ एक चक्षु है और उसे धर्म कहा गया है। अविवेकपूर्वक किया गया कार्य अनर्थकारी हो सकता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

दो दिवसीय तेरापंथ टास्क फोर्स शिविर

विजयनगर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप ने टुमकुर रोड स्थित रेजीडेंटी होलिडे रिजॉर्ट में तेरापंथ टास्क फोर्स लेवल १ कैंप का शुभारंभ किया। कार्यक्रम की शुरुआत सामुहिक नमस्कार महामंत्र व टीटीएफ गीत के संगान के साथ की गई। संस्कारक देवांग बैद, विकास बांठिया एवं बसंत डागा ने जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत करवाई। तेयुप के अध्यक्ष अमित दक ने वहाँ उपस्थित सभी अतिथियों, टीटीएफ कैडेट्स व एनडीआरएफ टीम का हार्दिक स्वागत व अभिनंदन करते हुए एनडीआरएफ टीम को ट्रेनिंग के लिए स्वीकृति प्रदान करने हेतु बधाई दी एवं सभी उपस्थिति कैडेट्स को अग्रिम शुभकामनाएँ दी।

तेरापंथ टास्क फोर्स के राज्य प्रभारी राकेश दक एवं मनीष पटावरी ने कार्यक्रम को मानव सेवा के लिए अत्यंत उपयोगी बताया। एनडीआरएफ टीम से पधारे प्रवीण कुमार उपाध्याय व उनके साथ पधारी संपूर्ण ट्रेनिंग टीम का तेयुप की ओर से स्वागत किया गया।

टीटीएफ के इस दो दिवसीय लेवल १ कैंप में संपूर्ण बैंगलुरु एवं मैसूर से पधारे कुल ४६ युवाओं ने अपना रजिस्ट्रेशन दर्ज करवाया। एनडीआरएफ जवानों की ट्रेनिंग टीम ने विभिन्न सत्रों में नई-नई तकनीकों के माध्यम से कई जीवन उपयोगी गुर सिखाए। प्रथम दिवस वहाँ मौजूद कैडेट्स को विभिन्न आपदाओं में कैसे स्वयं की व उसके पश्चात दूसरों की जान बचाई जाए वह सिखाया गया। कार्यक्रम के अंत में कैडेट्स द्वारा सीखे गए टॉपिक्स का उनसे ही डेमो लेकर रीविजन करवाया गया। एनटीआरएफ की तरफ से प्रथम सत्र सब इंस्पेक्टर प्रवीण कुमार उपाध्याय ने व भोजन के बाद हुए सत्र में हेड कांस्टेबल जी०एल आकर्ष और श्रीकांत आर०जे०, कांस्टेबल पाटिल अनिल, कांस्टेबल प्रमोद तांती, कांस्टेबल पाटिल हिम्मतराव शिवाजी ने कैडेट्स को प्रशिक्षण दिया। सभी कैडेट को विभिन्न ट्रेनिंग तकनीकों में भाग लेने का मौका भी मिला। अंत में रस्सी के विभिन्न उपयोग के बारे में बताया गया। सत्र का समापन शनिवार की साप्ताहिक सामायिक के साथ हुआ।

कैंप के द्वितीय दिवस में सभी बच्चों को एनडीआरएफ की टीम द्वारा कसरत कराई गई।

कैंप के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में कैरिंग एंड लिफ्टिंग की महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई, जिसमें किस प्रकार पीडित व्यक्ति को सुरक्षित स्थान पहुँचाया जाए एवं विभिन्न प्रकार के स्ट्रेचर बनाने की तरकीब बताई गई। समापन सत्र में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महेश बाफना, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना भी उपस्थित हुए। राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने अपने वक्तव्य में तेयुप, विजयनगर एवं तेरापंथ टास्क फोर्स को शुभकामनाएँ प्रेषित की एवं कहा कि तेरापंथ टास्क फोर्स बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है। महेश बाफना ने अभातेयुप में असीमित संभावनाओं के बारे में बताया। दिनेश पोखरना ने सभी कैडेट से अपील की कि दो दिवसीय शिविर में आप जो भी सीखें उसे अपने जीवन में अपनाएँ। राज्य प्रभारी मनीष पटावरी ने तेरापंथ टास्क फोर्स के देशभर में हो रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। राज्य प्रभारी राकेश दक ने दिन भर के कार्यक्रम की जानकारी दी।

अभातेयुप से किशोर मंडल के राष्ट्रीय सहप्रभारी विशाल पितलिया, विनोद मूथा, गौतम खाब्या, तेयुप बैंगलुरु के अध्यक्ष विनय बैद, टी-दासरहल्ली के अध्यक्ष कुणाल बाबेल के साथ तेयुप से पदाधिकारी मनोज बरड़िया, हितेश भटेवरा, राकेश पोखरना, दीपक बोहरा ने भी कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दर्ज की। मंत्री विकास बांठिया ने आभार व्यक्त किया। अभातेयुप के भूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया की कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में सभी कैडेट्स को प्रशस्ति पत्र के द्वारा सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम के प्रायोजक बाबूलाल, कांतिलाल, संजय भटेवरा बरार मंडिया बैंगलोर परिवार बने। तेयुप विजयनगर के मंत्री विकास बांठिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

६६वें एटीडीसी का उद्‌घाटन

चलथान।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेयुप, चलथान द्वारा अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन में मानव सेवा निमित्त डेंटल केयर एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का उद्घाटन किया। उचित मूल्य पर लोगों की चिकित्सीय सेवा करने के लक्ष्य के साथ उधना से संस्कारक अनिल चंडालिया, मिश्रीमल नंगावत, अनिल जैन के द्वारा जैन संस्कार विधि से ६६वें एटीडीसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का शुभारंभ किया गया। डेंटल केयर के उद्घाटनकर्ता बालचंद दक एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर के उद्घाटनकर्ता अशोक कुमठ थे। तेयुप अध्यक्ष ज्ञान दुगड़ ने पधारे हुए सभी मेहमानों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में अभातेयुप उपाध्यक्ष अमित नाहटा, उपाध्यक्ष महेश बाफना, कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना, संगठन मंत्री जयेश मेहता, युवा गौरव राजेश सुराणा, श्रेष्ठ कार्यकर्ता अनिल चंडालिया, महासभा उपाध्यक्ष लक्ष्मीलाल बाफना, शाखा प्रभारी सुनील चंडालिया एवं अभातेयुप परिवार से अनेक साथीगण, आसपास की सभी सम्मानित परिषदों के पदाधिकारीगण के साथ तेरापंथ समाज, चलथान की गौरवशाली उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन राकेश दक, मनोज कावड़िया ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री दीपक खाब्या ने किया। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी मीडिया प्रभारी विवेक दक एवं शुभम नौलखा ने दी।

भक्ति संध्या

तेयुप द्वारा एटीडीसी के शुभारंभ की पूर्व संध्या पर विराट भक्ति संध्या का आयोजन अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन में किया गया। जिसमें भीलवाड़ा से समागत सुमधुर गायक ऋषि दुगड़ ने अपने मधुर भजनों से विराट भक्ति संध्या को भक्तिमय बना दिया। इस अवसर पर अभातेयुप के उपाध्यक्ष-प्रथम अमित नाहटा, उपाध्यक्ष-द्वितीय महेश बाफना, कोषाध्यक्ष दिनेख पोखरना, संगठन मंत्री जयेश मेहता, शाखा प्रभारी सुनील चंडालिया, किशोर मंडल राष्ट्रीय संयोजक अर्पित नाहर, अभातेयुप सदस्य रौनक सरनोत, अभातेयुप सदस्य कुलदीप कोठारी एवं आसपास की परिषद से अनेक साथियों की उपस्थिति रही।

तेयुप द्वारा भजन संध्या के प्रायोजक तेजस कुमार मेहर का सम्मान किया गया। इस भक्ति संध्या को तेयुप, चलथान के फेसबुक पेज पर भी लाइव किया गया। जिसमें २०० से ३०० व्यक्तियों ने निरंतर लाइव भक्ति का आनंद लिया। लाइव पेज पर ३२००० व्यू मिले। भक्ति संध्या में चांदनी चपलोत, पूनम बुरड़, पारस गोलेछा, नीलेश टेबा ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन तेयुप उपाध्यक्ष राकेश दक, मनोज कावड़िया ने किया।

महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र का उद्‌घाटन

टी-दासरहल्ली।

प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा कुणीगल हाईवे स्थित एंटगानहल्ली सरकारी विद्यालय में तेयुप द्वारा सभी धर्म के चारित्रात्माओं के विहार भ्रमण के विश्राम के लिए महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र का उद्घाटन अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी की अध्यक्षता एवं तेयुप अध्यक्ष कुशल बाबेल के नेतृत्व में हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल बैंड के साथ विशाल रैली के माध्यम से हुई। उद्घाटनकर्ता मधु-विमल कटारिया ने फीता काटकर प्रज्ञा केंद्र का लोकार्पण किया। जैन संस्कारक राजेश देरासरिया एवं सह-संस्कारक मनीष पटावरी ने शुद्ध मंगल मंत्रोच्चार से जैन संस्कार विधि द्वारा प्रज्ञा केंद्र का शुभारंभ संस्कार संपन्न करवाया। तेयुप अध्यक्ष कुशल बाबेल ने सभी का स्वागत किया। तत्पश्चात कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने अल्प समय में संपन्न हुए इस स्थायी आयाम के लिए तेयुप को बधाई दी एवं अभातेयुप निर्देशित अन्य स्थायी आयामों को भी गति-प्रगति प्रदान करने की प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना ने प्रज्ञा केंद्र की संरचना की सराहना की। अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि संगठन की शक्ति का अनूठा उदाहरण टी-दासरहल्ली में देखने को मिलता है। शाखा प्रभारी विकास सेठिया ने शुभकामनाएँ संप्रेषित की। अभातेयुप परिवार एवं परिषदों के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। भामाशाह परिवारों का जैन पट्ट एवं मोमेंटो से सम्मान किया गया। ट्रस्ट अध्यक्ष नवरत्नमल गांधी, निवर्तमान अध्यक्ष एवं परिषद परामर्शक लादुलाल बाबेल, परिषद परामर्शक भगवतीलाल मांडोत, सह-संयोजक मुकेश चावत, महावीर मंडल अध्यक्ष रोशनलाल काल्या, महिला मंडल मंत्री गीता बाबेल एवं विद्यालय शिक्षक जगदीश ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर सकल जैन समाज की उपस्थिति रही। संचालन तेयुप मंत्री दिलीप पोखरना एवं सहमंत्री प्रवीण बोहरा ने किया। उपाध्यक्ष अनिल गादिया, कमलेश चावत, कोषाध्यक्ष हसमुख बाबेल, संगठन मंत्री देवीलाल गांधी, प्रचार-प्रसार कैलाश गिलुंडिया, ट्रस्ट परिवार, महिला मंडल, कार्यसमिति सदस्यगण, किशोर मंडल, कन्या मंडल की उपस्थिति रही। आभार सहमंत्री विनोद बोहरा ने किया।

कर्नाटक स्तरीय युवा सम्मेलन 'संगम' का भव्य आयोजन

गुरु शक्ति दिखाती है सच्ची राह

मैसूर।

तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में कर्नाटक स्तरीय युवा सम्मेलन का आयोजन 'संगम' को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आज की शक्ति, भक्ति और क्रांति के रूप में समायोजित युवा सम्मेलन प्रयागराज की स्मृति दिला रहा है। यदि शक्ति के साथ भक्ति और श्रद्धा जुड़ जाती है तो वह सृजनात्मक बन जाती है। युवा संगठन की तेजस्विता, वर्चस्विता, ओजस्विता और यशस्विता बढ़ाने के लिए आवश्यक है हमारी संपूर्ण भक्ति, समर्पण जिनशासन, तेरापंथ संघ और संघपति के प्रति होनी चाहिए। संघ को चिरजीवी और संघ की नींवों को गहराने के लिए श्रद्धा की भावना प्रगाढ़ बनी रहे।

उन्होंने कहा कि युवाओं में जैनत्व के संस्कार सुरक्षित रहने चाहिए। यह सच्चाई है कि हर युवा अपने पूर्वजों की बदौलत जैनत्व को जी रहा है। युवाओं का परम कर्तव्य है कि वह जैनत्व के पवित्र संस्कार अपनी भावी पीढ़ी में संक्रांत करे। यह संगम सम्मेलन मात्र आयोजन नहीं, यह प्रेरणा देता है कि परिवार और समाज में कुरूढ़ियाँ पैदा न हों। क्रांति के द्वारा समाज में सृजनता आनी चाहिए। हुक्का पार्लर जैसी गलत विधा से दूर रहने का प्रयास करें। नई पीढ़ी को संस्कारों के गुमराह होने से बचाएँ। आचार्यश्री महाश्रमण जी का हर अनुयायी जागरूक बने। अपनी शक्ति, साधन और धन का अर्जन कैसे किया जा रहा है यह चिंतन करे। हर युवा दायित्व बोध करे। लोभ वृत्ति को आवरणित करें और संयम की चेतना का जागरण करें। यह संगम सम्मेलन संघ भक्ति और गुरु भक्ति का रूप है। तेरापंथ धर्मसंघ का हर युवा अपने कर्तव्यों का सही नियोजन कर रहा है। गुरु दृष्टि का आराधन कर रहा है, शक्ति, भक्ति, क्रांति की त्रिपथगा में स्नान कर आनंद की अनुभूति कर रहा है।

पावन हाउस उसी गुरु की शक्ति सदैव सही राह दिखाती है। गुरु निर्देशन में युवा पीढ़ी सुखद भविष्य का निर्माण करे। संघ प्रभावना में चरण सदा गतिमान रहे। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेयुप ने विजय गीत प्रस्तुत किया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने सम्मेलन प्रारंभ की उद्घोषणा एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप अध्यक्ष विक्रम पितलिया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। 'सरगम' टीम ने समुह संगान कर सबमें नया जोश भर दिया। तेरापंथ सभाध्यक्ष शांतिलाल कटारिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दक, अभातेयुप कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना, अभातेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने विचार व्यक्त किए। राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने कहा—युवकों में ऐसा साहस और कार्यजा शक्ति है जो संघ विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मुख्य वक्ता महावीर गोलेच्छा ने कहा—हर युवा योजनाबद्ध तरीके से संघ विकास के प्रति जागरूक बने। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने गीत का संगान किया। किशोर मंडल द्वारा 'तेरापंथ मिलेट्री फोर्स' कार्यक्रम की सुंदर प्रस्तुति दी। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए।

पाँच सत्रों के रूप में आयोजित इस सम्मेलन में आलोक छाजेड़, मैसूर परिषद प्रभारी, तेरापंथ टाइम्स कार्यकारी संपादक दिनेश मरोठी, नेत्रदान प्रभारी नवनीत मूथा, विजयनगर तेयुप पूर्वाध्यक्ष पवन मांडोत राष्ट्रीय सामायिक साधक प्रभारी विनोद मूथा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मैसूर तेयुप ने अपनी गतिविधियों की प्रस्तुति दी। सी०पी०एस० प्रभारी सतीश पोडवाड ने अभातेयुप की गतिविधियों की जानकारी दी।

संयोजक की भूमिका निभाई तेयुप उपाध्यक्ष चिराग दक, प्रमोद मुणोत, तेयुप कोषाध्यक्ष गौरव मेहता, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष दिनेश दक, तेयुप संगठन मंत्री विनोद मुणोत, तेयुप मंत्री विकास गांधी मेहता एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने

पाँच सत्रों में महिला मंडल, गांधीनगर टीम, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने मंगल संगान किया। महिला मंडल मंत्री वनिता बाफना ने ब्रेन फूड प्रतियोगिता की आकर्षक आयोजना की।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी एवं संपूर्ण टीम का मोमेंटो साहित्य आदि के द्वारा सम्मान किया गया। तेरापंथ सभा, तेयुप एवं महिला मंडल ने मुख्य प्रायोजक माणकलाल मुणोत परिवार का सम्मान किया। तेयुप के मंत्री विकास गांधी मेहता ने आभार जताया।

इस अवसर पर गौतम खाब्या, संजय बैद, हुबली से तेजराज चौपड़ा, राकेश दक, महासभा सदस्य महावीर देरासरिया आदि की उपस्थिति रही।

बैंगलोर, राजाजीनगर, गांधीनगर, आर०आर० नगर, हनुमंतनगर, यशवंतपुर, विजयनगर, चिकमंगलूर, हुबली, हिरियुर, शिमोगा, दावणगेरे, मंडिया, श्रीरंगपटना, हासन, के०आर० नगर, गदग, हुसुर, टी-दासरहल्ली, बेलगाँव, नंजुनगुड, प्रियापटना, कोप्पल आदि क्षेत्रों के युवकों की शानदान उपस्थिति रही।

'सुरों का महासंग्राम' फाईनल का आयोजन

जयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ धर्मसंघ की संगीत के क्षेत्र में उभरती हुई प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करने की दृष्टि से सरगम (युगल गायन प्रतियोगिता) का आयोजन देशभर में किया गया। फाइनल राउंड का आयोजन अणुविभा केंद्र में तेयुप, जयपुर द्वारा किया गया।

सरगम फाईनल की मेजबानी करते हुए तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने पधारे हुए अतिथियों का स्वागत-अभिनंदन किया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने कहा कि सचमुच में हमारा जीवन भी एक सरगम है। जब तक सुर और ताल नहीं मिलते हम आगे नहीं बढ़ सकते। जहाँ सुर और ताल मिलते हैं, तभी संगीत में माधुर्य आता है। ठीक वैसे ही एक-दूसरे का अपनापन, सौहार्द, समन्वय और तालमेल मिलता है। तब जीवन में संगीत बजता है और वही संगीत हमें अपने वातावरण, अपने परिवेश में मधुर बनाता है।

कार्यक्रम में अभातेयुप के उपाध्यक्ष-प्रथम अमित नाहटा, उपाध्यक्ष-द्वितीय महेश बाफना, महामंत्री मनीष दफ्तरी, सहमंत्री-प्रथम अनंत बागरेचा, सहमंत्री-द्वितीय अभिषेक पोखरना, कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना, संगठन मंत्री जयेश मेहता, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य यशवंत रामपुरिया, जयपुर से हितेश भांडिया, सिद्धार्थ गधैया, कपिल दुगड़, ऋषभ बैद सहित अनेकों गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने गायक कलाकारों की आधुनिक वाद्ययंत्रों के साथ आकर्षक एवं सुरीली प्रस्तुति से प्रभावित होकर उन्होंने कहा कि गुलाबी नगरी में भारत के विभिन्न प्रांतों से आए हुए संभागियों ने अपने भक्तिमय संगीत के वाद्य से इस तरह का समा बाँधा कि पूरा वातावरण संगीतमय हो गया। यह पूरा आयोजन अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मापदंडों पर आयोजित किया गया। फाईनल में पहुँची सभी १५ टीमों के संभागियों ने ऐसा समा बाँधा कि लोग मंत्रमुग्ध हो गए।

अभातेयुप के कार्यक्रम का संचालन करते हुए सोनल पिपाडा ने बताया कि संगीत-गायन के क्षेत्र में युवा प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करना, इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। आधुनिक वाद्ययंत्रों से युक्त इस संगीतमय शाम में सरगम के फाईनल राउंड में देशभर के प्रतिभागियों के साथ जयपुर सहित १५ टीमों की प्रस्तुति हुई।

भारत में संगीत के क्षेत्र में अपना एक अलग स्थान रखने वाले लुधियाना की उर्वशी चौपड़ा व दर्शन चौपड़ा (भाई-बहन की जोड़ी) को सरगम फाईनल की विजेता टीम के रूप में चुना गया। इसके साथ ही द्वितीय स्थान अहमदाबाद की पल्लवी टाटिया व जिज्ञासा पींचा तथा तृतीय स्थान पर सूरत की राजुल सुराणा व जिनल जैन को चुना गया।

अहमदाबाद के दीपक संचेती व धीरज पोखरना, मुंबई की तारा आछा व अनिक आछा, डोंबीवली की करिश्मा कोठारी व कोमल इंटोदिया, केलवा की जागृत कोठारी व झील कोठारी, सूरत की अर्चना बैद व अर्पिता संचेती को इस तरह कुल ५ टीमों को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तेयुप, जयपुर से सरगम टीम के सदस्य सुनील डागा व धर्मेन्द्र बोथरा ने प्रस्तुति देकर जयपुर का नाम रोशन किया।

तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने बताया कि कार्यक्रम में उदारमना महानुभावों ने हमें मुक्त हस्त सहयोग प्रदान किया, उनमें मुख्य प्रायोजक के रूप में बच्छावत परिवार, प्रायोजक धनराज भीकमचंद हेमराज पुगलिया, राजेश पटावरी, प्रमोद महेंद्र नरेंद्र छाजेड़ से सहयोग प्राप्त हुआ। सरगम की प्रेक्टिस, कार्यक्रम और आवास व्यवस्थाओं के संदर्भ में अणुविभा, जयपुर केंद्र के अध्यक्ष पन्नालाल बैद व उनकी पूरी टीम का सहयोग रहा। सभी ने कार्यक्रम की प्रशंसा की।

जयपुर परिषद के मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि सरगम की संयोजना में राष्ट्रीय प्रभारी लक्की कोठारी व सह-प्रभारी सुनील चंडालिया के साथ तेयुप, जयपुर टीम के सदस्यों ने सरगम का जो भव्यतम स्वरूप प्रदान किया उसको शब्दों में बयाँ नहीं कर सकते। कार्यक्रम में राष्ट्रीय, प्रांतीय व स्थानीय स्तर की सभा-संस्थाओं के गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सिद्धार्थ गधैया ने किया। कार्यक्रम की संयोजना में तेयुप, जयपुर टीम के सभी सदस्यों का उल्लेखनीय श्रम रहा।

✦ जीवन में ज्ञान का प्रकाश और चारित्र की सौरभ हो तो मानना चाहिए कि जीवन अच्छा है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

प्रधान संपादक की कलम से...

अध्यक्षीय उद्‌गार

पूज्यप्रवर के पावन आशीर्वाद एवं युवा साथियों के सहयोग से अभातेयुप के ५३वें वार्षिक अधिवेशन में बैंगलुरु में १० नवंबर, २०१९ को २०१९-२१ के २ वर्षीय कार्यकाल के लिए अध्यक्ष के रूप में गुरुदृष्टि प्राप्त हुई। मैं अपने आपको अत्यंत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे संघ सेवा का यह दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ। पद एक संवैधानिक व्यवस्था है परंतु सभी कार्य गुरु की दृष्टि एवं साथियों के श्रम से निष्पत्ति को प्राप्त करते हैं। गुरु कृपा एवं संपूर्ण देश एवं विदेश की युवा शक्ति के सहयोग से यह द्विवर्षीय कार्यकाल अपने चरम पर है। गुरु इंगित की प्रतिपल आराधना को ही हमने अपना लक्ष्य बनाया और अपने दायित्व को पूरा करने का हर संभव प्रयास किया।

इन दो वर्षों में हर तरह की सम और विषम परिस्थितियों में गुरुदेव का आशीर्वाद संजीवनी बनकर हमें निरंतर कार्य करने के लिए प्रेरित करता रहा। कार्यकाल में तेयुप की शाखाओं से जब भी मिलने का अवसर मिला उनके जोश उत्साह और समर्पण को देखकर अनन्य गौरव की अनुभूति होती थी। आज मेरी कलम इस संगठन को सेवा प्रदान करने वाले हर कार्यकर्ता की कर्मजा शक्ति को आदरपूर्वक नमन करती है कि उन्होंने सेवा, संस्कार और संगठन के हर आयाम को संघीय रीति-नीति के साथ संपादित किया।

सत्र-२०१९-२१ में युवाओं एवं किशोरों को आध्यात्मिक गतिविधियों से जुड़े रखने हेतु तपोयज्ञ के माध्यम से प्रभु पार्श्व प्रणति, मंगलकामना-शुभभावना उपवास शृंखला, भादुड़ी तेरस, संकल्पों का कल्पवृक्ष, जप-तप महायज्ञ के अंतर्गत सभी को जोड़ने का प्रयास किया, जिसमें सभी ने अपनी कर्म निर्जरा की। जैन सामायिक फेस्टिवल के माध्यम से १८ देशों में २७५००० सामायिक के माध्यम से संपूर्ण जैन समाज में तेरापंथ धर्मसंघ का परचम लहराया गया। इस कार्यकाल में जैन संस्कार विधि को व्यापकता प्रदान करने के उद्देश्य से २३४ नए जैन संस्कारकों सहित वर्तमान में ३८१ जैन संस्कारकों की टीम तैयार है। चारित्रात्माओं की मार्ग सेवा में युवावाहिनी के अंतर्गत ३३६ दिनों की सेवा में १४२ शाखा परिषदों के ३८०० युवाओं को सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जैन-जैनेत्तर हर व्यक्ति को सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के १५ नए सेंटर, ८ आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल एवं १५ डेंटल केयर का इस कार्यकाल में शुभारंभ होने से जनमानस को चिकित्सा परीक्षण सेवाओं का लाभ मिल रहा है। मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के माध्यम से इन दो वर्षों में आयोजित शिविरों में ५५००० से अधिक यूनिट रक्तदान एवं ३००० से अधिक प्लाज्मा डोनेशन कर जनसेवा का अतुलनीय कार्य किया गया जो विश्व की अनेक रिकॉर्ड बुक्स में भी दर्ज हुआ।

तेरापंथ टास्क फोर्स के माध्यम से फिजिकल एवं वर्चुअल कार्यशाला द्वारा १२८५० से अधिक संभागियों को आपदा सहायता के लिए प्रशिक्षित किया गया। मानव सेवा के आयाम नेत्रदान के अंतर्गत ३२५ से अधिक नेत्रदान कर लोगों के जीवन में रोशनी बिखेरी गई। आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में २२ नए प्रज्ञा केंद्रों का शुभारंभ किया गया।

व्यक्तित्व विकास के अंतर्गत कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग की ३२ कार्यशाला सहित ४७ कार्यशालाओं के माध्यम से हजारों युवाओं के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

धर्मसंघ के प्रतिभावान गायकों को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से सरगम सीरीज ३ में ४८ प्रतिभा युगल प्रतिभागी चयनित हुए और जयपुर में फाइनल का वृहद आयोजन हुआ।

कोविड-१९ वैश्विक महामारी में तेरापंथ समाज के अतिरिक्त अभावग्रस्त पीड़ित परिवारों को राहत सामग्री, औषधि वितरण आदि का कार्य जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, टीपीएफ एवं महिला मंडल के साथ संयुक्त रूप से किया गया। कोविड-१९ की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वर्चुअल रूप से मंत्र दीक्षा, जैन विद्या कार्यशाला, १२ व्रत कार्यशालाओं आदि का आयोजन हुआ। इन दो वर्षों में १८० परिषदों के माध्यम से २८०० से अधिक श्रावक-श्राविका १२ व्रती बने। कोरोना काल में विभिन्न क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर सोशल मीडिया के माध्यम से लाइव प्रसारण किए गए। इस कार्यकाल के प्रारंभ में अभातेयुप को डिजिटल बनाने के स्वप्न को साकार करते हुए अभातेयुप की वेबसाइट, एमबीडीडी, एटीडीसी, टीटीएफ, नेत्रदान की स्वतंत्र वेबसाइट का निर्माण किया गया और तेरापंथ टाइम्स को नया स्वरूप प्रदान करते हुए इसको भी डिजिटल कर जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है।

महामारी की इन विकट परिस्थितियों में तेरापंथ किशोर मंडल का १५ एवं १६ राष्ट्रीय अधिवेशन एवं अभातेयुप का ५४वाँ वार्षिक अधिवेशन ऑनलाइन आयोजित किया गया, जिसमें देशभर के हजारों युवकों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। संकल्प संगठन यात्रा एंव मिशन १५-४५ के माध्यम से देशभर से युवाओं को धर्मसंघ से जुड़ने का विशेष अवसर मिला। अभातेयुप के समस्त आयामों, गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को केंद्रीयकृत करने के उद्देश्य से लाडनूं कार्यालय को सशक्त बनाते हुए संपूर्ण रिकॉर्ड वहाँ पर संग्रहित किए गए।

शाखा परिषदों एवं युवा साथियों की कर्मजा शक्ति ने यह साबित कर दिया कि दृढ़-संकल्प और सकारात्मक चिंतन हो तो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विकास के नए आयाम उद्घाटित हो सकते हैं। किसी भी कार्य को संपादित करने के लिए अर्थ विशेष मायने रखता है। इस कार्यकाल में समस्त अनुदानदाताओं को भी विशेष साधुवाद देता हूँ जिनके सहयोग से हर कार्य सुचारु रूप से अंजाम तक पहुँच पाया।

इन दो वर्षों में अभातेयुप के मुखपत्र अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स और युवादृष्टि के प्रधान संपादक के रूप में जुड़े रहने का अवसर मिला। हमारा सदैव यह प्रयास रहा कि संस्था के यह दोनों प्रकाशन आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरे एवं संघीय आलेखों के साथ-साथ आचार्यप्रवर एंव चारित्रात्माओं की वाणी का लाभ आप सभी को निरंतर मिलता रहे। कोरोना की विकट परिस्थितियों के बावजूद भी तेरापंथ टाइम्स का निरंतर ऑनलाइन प्रकाशन होना इसके पाठकों के लिए वरदान साबित हुआ। इस कार्य में कार्यकारी संपादक दिनेश मरोठी का विशेष श्रम नियोजित हुआ, जिन्होंने अपने चिंतन से तेरापंथ टाइम्स को नवीन स्वरूप प्रदान किया। तेरापंथ टाइम्स के कुशल संचालन में राष्ट्रीय प्रकाशन प्रभारी मनोज संकलेचा, रविन कोठारी, हनुमान दुगड़, विमल गुगलिया, दिल्ली कार्यालय से दिनेश शर्मा, एल०आर० भारती, कैंप ऑफिस से कमल शर्मा आदि कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

मेरे पूज्य पिताजी श्री मोतीलाल कोठारी एवं माताजी श्रीमती प्रेमा देवी कोठारी को नमन करता हूँ जिनके सद्‌संस्कारों से मैं अपने दायित्व का निर्वहन कर पाया। मेरी धर्मपत्नी कल्पना कोठारी एवं पुत्र श्लोक एवं मेरे सभी शुभचिंतकों का अपने दायित्व निर्वहन में सहयोगी बनने हेतु सदैव ऋणी रहूँगा। अभातेयुप के प्रशासनिक, पंजीकृत, शिविर एवं अन्य सभी कार्यालयों में कार्यरत सभी साथियों को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु सादर धन्यवाद करता हूँ।

अनंत कृतज्ञता पूज्यप्रवर के प्रति जिन्होंने मुझे राष्ट्रीय अध्यक्ष के दायित्व के साथ कल्याण परिषद का संयोजकीय दायित्व निभाने का अवसर भी प्रदान किया। दायित्व निर्वहन में पूज्यप्रवर एवं चारित्रात्माओं के इंगित की सम्यक् आराधना में किंचित मात्र भी अतिक्रमण हुआ हो तो मैं सरल हृदय से खमतखामणा निवेदन करता हूँ। मुनि दिनेश कुमार जी, अभातेयुप आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी, मुनि नयकुमार जी एवं समस्त चारित्रात्माओं के प्रेरक मार्गदर्शन हेतु अनंत कृतज्ञता ज्ञापित कर खमतखामणा करता हूँ।

इस कार्यकाल में दायित्व निर्वहन के दौरान अगर किसी की भावना का यथेष्ट सम्मान नही कर सका हो तो कार्यकाल की संपन्नता के अवसर पर संपूर्ण केंद्रीय संस्थाओं, अभातेयुप साथीगण, शाखा परिषदों की टीम, संपूर्ण युवा शक्ति एवं श्रावक-श्राविका समाज से सरल हृदय से खमतखामणा करता हूँ।

अभातेयुप के आगामी नव नेतृत्व के प्रति अग्रिम शुभकामनाएँ एवं मैं यह संकल्प भी लेता हूँ कि मैं भविष्य में संघ एवं अभातेयुप के लिए निर्बाध रूप से यथासंभव अपनी सेवाएँ प्रदान करता रहूँगा।

इस कार्यकाल में आप सभी का जो आशीष, स्नेह, वात्सल्य और सहयोग मिला है वह मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है जो जीवन-पर्यन्त मेरे स्मृति पटल पर अंकित रहेगा।

प्रधान संपादक
– संदीप कोठारी

संपादकीय

संघीय समाचारों का विशेष साप्ताहिक मुखपत्र है–तेरापंथ टाइम्स जो संघीय समाचारों को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम है। मुझे आचार्यप्रवर के बैंगलुरु चातुर्मास के समय इससे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप कोठारी ने मुझे कार्यकारी संपादक के रूप में मनोनीत किया। अनंत कृतज्ञता पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति जिन्होंने मुझे हैदराबाद में वरदहस्त प्रदान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के पावन आशीर्वाद एवं उनसे प्राप्त ऊर्जा से सम-विषम परिस्थितियों में सहज रूप से यह कार्य करने का अवसर मिला। मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी, मुनि दिनेश कुमार जी, अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमार जी, मुनि नयकुमार जी एवं समस्त चारित्रात्माओं के प्रति हृदय से कृतज्ञता जिनके आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से सतत दायित्व निर्वहन हेतु निरंतर प्रेरणा मिलती रही।

साप्ताहिक प्रकाशन के इस उपक्रम से जुड़ने के पश्चात निरंतर मेरे ज्ञान में वृद्धि हुई यह मेरे जीवन की अनुपम उपलब्धि रही। कार्यकारी संपादक के रूप में कार्य करते समय कभी उलाहना तो कभी शाबाशी भी मिली। उलाहना मुझे अपनी भूल सुधार की प्रेरणा देता तो शाबाशी मुझे और अधिक दृढ़-निश्चय के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करती। मुझ जैसे कार्यकर्ता को तेरापंथ टाइम्स के संपादक के रूप में नियुक्त करना मेरे जीवन की अमूल्य निधि बनी, क्योंकि इस दौरान मुझे अनेक प्रबुद्ध एवं विदुषी चारित्रात्माओं से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष संवाद अवसर मिला। सभा-संस्थाओं के समाचार संयोजन में पदाधिकारियों से भी मुझे बहुत कुछ सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। समय-समय पर विशेष अवसरों पर एवं संघीय कार्यक्रमों पर विशेष अंक तैयार करना, अखबार को नवीनता प्रदान करना प्रति सप्ताह रोचक अनुभूति करवाता।

कोरोना की विषम परिस्थितियों में जब इसका ऑनलाइन प्रकाशन शुरू हुआ इस दौरान ऑनलाइन समाचार पढ़ने के साथ आचार्यप्रवर का वीडियो भी लिंक के माध्यम से देखने को मिलता। इसमें एक नवीन क्रांति तब हुई जब इसका www.terapanthtimes.com के माध्यम से ऑनलाइन पोर्टल लॉन्च हुआ। यह पोर्टल हर व्यक्ति की पहुँच में निरंतर बना रहेगा, क्योंकि मोबाइल आज रोटी, कपड़ा और मकान के बाद की जरूरत बन गया है। इस पोर्टल के माध्यम से कभी भी, कहीं भी, किसी भी समाचार को देखा जा सकता है। इस पोर्टल को बनाने में विशेष प्रेरणा महामंत्री श्री मनीष दफ्तरी की रही। वे तेरापंथ टाइम्स को सामयिक रूप प्रदान करना चाहते थे। तेरापंथ टाइम्स के संपादन में विशेष सहयोग दिल्ली कार्यालय से श्री दिनेश शर्मा, एल०आर० भारती, प्रिंटर दीपक वर्मा, इंदौर से रवि कोठारी का रहा। इस नवीन भूमिका को निभाने में मुझे अतुलनीय सहयोग और प्रेरणा अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी की रही, जिन्होंने मेरा सतत उत्साहवर्धन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने मुझे कार्यकारी संपादक के साथ राष्ट्रीय सह-प्रकाशन प्रभारी के रूप में भी दायित्व दिया। इस दायित्व को निभाने में बड़े भाई तुल्य राष्ट्रीय प्रभारी श्री मनोज संकलेचा का विशेष मार्गदर्शन रहा।

संपादन कार्य में अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष श्री मर्यादा कोठारी, अभातेयुप उपाध्यक्ष श्री अमित नाहटा, पूर्व संपादक इंद्र बैंगाणी का भी स्नेहमय सहयोग रहा। केंद्रीय समाचारों के लेखन में श्री हनुमान दुगड़, आदान-प्रदान में भाई कमल शर्मा, श्री रजत सिंधी, हरीश शर्मा आदि का विशेष सहयोग रहा।

किसी भी कार्य को संपादन करते समय उसमें गलतियाँ भी होती हैं, मेरे दायित्व के दौरान आचार्यप्रवर की वाणी को लिपिबद्ध करने में कहीं भूल रही हो या संघीय रीति-नीति का उल्लंघन हुआ हो तो मैं सरल हृदय से श्रीचरणों में बारंबार खमतखामणा करता हूँ। संस्थागत एवं क्षेत्रीय समाचारों के प्रकाशन में अगर कोई भी समाचार छूटा हो तो मैं संपूर्ण भारत वर्ष में कार्यरत धर्मसंघ की संस्थाओं एवं श्रावक समाज से बारंबार क्षमायाचना करता हूँ।

विशेष धन्यवाद मेरे माता-पिता संतोष देवी-दुलीचंद मरोठी को जिन्होंने मुझे धार्मिक संस्कार प्रदान किए। आभार मेरी धर्मपत्नी रेखा एवं मेरी पुत्रियाँ प्रज्ञा-प्रेक्षा एवं राजवीर को जिन्होंने मुझे इस कार्य के समय नियोजन में सहयोग किया।

तेरापंथ टाइम्स के साथ जुड़ना सचमुच में अविस्मरणीय और सुखद रहा, क्योंकि इस दौरान मुझे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला और मेरे ज्ञान की श्रीवृद्धि हुई।

कार्य को करने में राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संपादक श्री संदीप कोठारी एवं महामंत्री श्री मनीष दफ्तरी ने खुला आकाश एवं सदैव प्रोत्साहन दिया, जिससे कार्य करने की क्षमता द्विगुणित हो गई।

अभातेयुप के नए नेतृत्व के साथ नई प्रकाशन एवं संपादकीय टीम को भी सफलतम कार्यकाल के लिए अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएँ। तेरापंथ टाइम्स हर तेरापंथी श्रावक-श्राविका का गौरव बने, लोकप्रियता के नव इतिहास रचे---

कार्यकारी संपादक
– दिनेश मरोठी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**